108 GEMS FROM THE SACRED TIRUKKURAL

WITH TRANSLATIONS IN

SANSKRIT, HINDI, MALYALAM, & ENGLISH

BY

T. V. PARAMESWAR IYER, M.A., B.T.

। १०८ तिरुक्कुरल् रत्न ।

संस्कृत, हिन्दी, मलयालम तथा इंगलिश भाषाओं में अनुवाद सहित

अनुवादक :-

टी. वी. परमेश्वर अय्यर, एम. ए. बी. टी.

प्रकाशक :

श्री जगदम्बा विद्या विहार

२९-११ राजेन्द्र नगर

नई दिल्ली-५

Price : 2-00 मूल्य २-००

प्रशस्ति

प्राचीन तमिल् साहित्य में "तिरुक्कुरल्" नाम की कविता का बहुत महत्व है। लेखक श्री परमेश्वर अय्यर् ने कविता के १०८ पदों का संस्कृत, हिन्दी, मलयालम और अंग्रेजी भाषाओं में अनुवाद कर भारतीय साहित्य की बहुत सेवा की है।

माला के एक सौ आठ मनकों की भाँति महान् कवि सन्त तिरुवल्लुवर् के पदों का निर्वाचन बहुत कुशलतापूर्वक किया गया है। ये सब के सब पद बार-बार पाठ करने और स्मरण करने योग्य हैं। इनको हिन्दी और अंग्रेजी भाषा-भाषी पाठकों तक पहुंचाने का यह स्तुत्य कार्य वर्तमान पुस्तक के लेखक ने किया है। हिन्दी जगत विशेषरूप में इनका आभार मानेगा।

तिरुक्कुरल् के सब के सब पद अति गूढ़ और उपकारी भावों से ओत-प्रोत हैं। इनमें ये निर्वाचित पद धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के दिलाने वाले सिद्ध होंगे। एक-एक पद पर पुस्तक अथवा लम्बे लेख लिखे जा सकते हैं।

एक बात वर्तमान पुस्तक के लेखक ने और की है। उन्होंने तमिल मूल एवं मलयालम् छन्दोबद्ध अनुवाद देवनागरी लिपि में लिखकर हिन्दी के पाठकों पर अत्यन्त कृपा की है। हिन्दी पाठक इस कविता को पढ़कर इसके माधुर्य को स्वयम् अनुभव कर सकेंगे।

मैं श्री परमेश्वर अय्यर को उनके इस सराहनीय प्रयास के लिए बधाई देता हूँ।

नई दिल्ली
२०-२-६७
67

गुरु दत्त

Multi-lingual Publication Scheme

As a humble step towards the national integration of India we have undertaken the translation of good works of ever lasting literary and cultural interest from and into SANSKRIT, HINDI, TAMIL, MALAYALAM and ENGLISH. The first book in the series is with you. Our next attempt in this direction is ATHI-SOODI—the ALPHABETICAL APHORISMS of AUVAIYAR" the GRANNY POETESS of classical TAMIL, nearly 2000 years ago. The sutras are homely sayings current in every household in Tamil Nadu even today. They are arranged in the alphabetical order. In our translations in Sanskrit, Hindi, Malayalam and English we have preserved the same alphabetical order in every language. Authors and others interested in this laudable venture please contact us.

Books available for sale

108 Maxims from A guide to Bliss by Seth Shri Ram Krishna Dalmia with Sanskrit and Hindi Translations ...	1—00
108 Gems from the Sacred Tirukkural with Hindi, Sanskrit, Malayalam and English translations ...	2—00
Athi Soodi ; (in the press) ...	1—50

(Reasonable discount to Book Sellers, School and College Libraries etc.)

Principal

Sri Jagdamba Vidya Vihar

29/11, Rajendra Nagar, New Delhi-5

बहुभाषा प्रकाशन आयोजन

विविध सद्ग्रन्थों के अनुवाद विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित करने की हमारी योजना के अन्तर्गत यह प्रथम पुष्प आपके हाथ में है। इस ग्रन्थ माला में द्वितीय पुष्प के रूप में हम शीघ्र ही "आत्तिशूडि" को प्रस्तुत कर रहे है। तमिल् भाषा में साहित्यिक "दादी माँ" के नाम से सुविख्यात "औव्वैयार्" इस ग्रन्थ की लेखिका हैं। पिछले दो हजार वर्षों से तमिल् नाडू के घर घर में इस ग्रन्थ के सूत्ररूपी सदुपदेशरत्न इतने लोकप्रिय रूप से प्रचलित हैं कि ये कहावत बन गये हैं। वर्णमाला के अक्षरों के क्रम से सूत्रों की रचना है। जैसे तिरुक्कुरल् के अनुवाद में किया गया है, उसी प्रकार संस्कृत तथा मलयालम में छन्दोबद्ध अनुवाद तथा हिन्दी एवं इंगलिश में गद्य अनुवाद हम प्रस्तुत करते है। अकारादि क्रम सब भाषाओं में अपनाया गया हैं। इस सराहनीय कार्य में योगदान करने के इच्छुक लेखक प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता सज्जन संपर्क करें।

प्रधानाचार्य :-
श्री जगदम्बा विद्या विहार
२६/११ राजेन्द्र नगर
नई दिल्ली-५.

Pages 1 to 24 Printed at Vipin Press, 3, Salwan School Market. 25 to 56 at Gopal Printers, 1474, Abdul Rehman Road. Karol Bagh New Delhi.

ग्रन्थ प्रशस्तिः

ओतर्कु एँलितायुणर् तर्करिताकि
वेदप्पाँरुलाय् मिक विलंकित्-तीतररोर
उल्लुताँ रूल्लुताँरुल्लमुरुक्कुमे
वल्लुवर् वाय् माँयि माण्पु

—मांकुडि मरुतनार्

श्रीमतो वल्लुवमहाकवेः प्रशस्योऽयं ग्रन्थः पाठे सरलः अर्थगंभीरः वेदप्रतिपाद्यार्थप्रतिपादकः ततोऽपि लोकप्रियः दोषमुक्तैः पुनः पुनरालोच्यमानः हृदयद्रवीकरणक्षमः।

—मांकुडि मरुतनार्

अनुवादकर्तुः प्रास्ताविकम्

धर्मसूत्रात्मकं काव्यं क्व वल्लुवमहाकवेः ।
क्व चात्यल्पपरिज्ञान दुर्विदग्धा मतिर्मम ।।

तथापि द्राविड़ीज्ञानरिक्तानाँ विदुषाँ कृते ।
प्रयासोऽयं ममौद्धत्यं क्षन्तुमर्हन्ति सज्जनाः ।।

स्वर्णपात्रे च मृभ्दाण्डे चापि वा अपितं पयः ।
किं न यच्छति दध्यादि विभिन्नं स्वदते नु किम् ।।

साहितीरसविदाँ विवेकिनाँ रंजनाय विदुषाँ किलाधुना ।
आदरेण परमेश्वरार्पितं श्रेयसेऽस्त्विदमखंडतुष्टये ।।

"अगुलय" मितसंख्य श्लोक रत्नेषु सत्सु,
स्फुटमिह "जनका" ढ्यान्येव संगृहृय दातुम् ।

"न हि गुडगुलिकायाः क्वापि माधुर्यभेदः"
प्रकट मिति वदन्तः सन्त एव प्रमाणम् ।।

["अगुलय" इत्यस्य कटपयादिगणनरीत्या १३३० इत्यर्थः । "जनक" इत्यस्य १०८ इति च । "तिरुक्कुरल्" ग्रन्थे १३३० श्लोकाः सन्ति । अत्र तु १०८ श्लोका एव संगृहीताः]

उच्चारण संकेत

र अंग्रेजी में Rat का ।　　य़ ल और य के बीच का वत्स्र्य अक्षर ।
ल अंग्रेजी में All का ।　　ऍ ह्रस्व एकार
रर Attractive जैसा　　ऑ ह्रस्व ओकार

धर्म खंड

1. अकर मुतल ऐयुत्तल्लाँ आदि भगवन् मुतरे उलकु १-१

अकाराद्याः समे वर्णाः भाषासु निखिलास्वपि ।
चराचरात्मकं चापि जगदीशादिकं ननु ।।

सब वर्णमालाओं में "अ" अक्षर पहले आता है। सारे संसार में प्रथम भगवान है ।

अकारं भाषकल्कॅल्लामादिमं वर्णमालयिल् ।
प्रपंचमखिलत्तिन्नु आद्यनाय् निल्पतीश्वरन् ।।

All the letters of the alphabet have "A" at their beginning. The entire universe has the Primordial Deity for its first.

2. अऱत्तिनू उंकु आक्कमु इल्लै अतनै मऱत्तलिन् ऊंकिल्लै केट्टु ।। ४-२

धर्मस्याचरणात् परं किमपि ते नैवास्ति शर्मप्रदं ।
तद्विस्मृत्युपचीयमानमखिलं जानीहि पापं सखे ।।

धर्म के आचरण की अपेक्षा अधिक कल्याणकारी कुछ भी नहीं है। उसकी विस्मृति की अपेक्षा नाशकारी कुछ भी नहीं ।

धर्ममल्लातॅ वेरॉन्नु इल्ल नन्मय्कु कारणं ।
अतिन् विस्मृतियॉन्नल्लातिल्ल तिन्मय्कु हेतुवाय्

There is no greater source of weal than virtuous conduct There is no greater source of worry than the forgetfulness thereof.

3. अन्पुं अर्नुं उटैत्तायिन् इल्वाय्क्कै पण्पुं पयनुं अतु ॥ ५-५

धर्मपूतं सुगार्हस्थ्यं अनधप्रेमभासुरम् ।
यदि स्यात्त न नैर्मल्यं साफल्यं विद्धि तस्य तत् ॥

विवाहित जीवन में धार्मिक आचरण एवं पावन प्रेम का समावेश हो तो वही उसकी पवित्रता और सफलता का लक्षण है ।

प्रेमवुं धर्मवुं चेन्नुं गार्हस्थ्यं विकसिक्कुकिल् ।
अतिल् तंन्नँ यतित् शुद्धि अतिल् तान् सफलत्ववुम् ॥

A life of wedded bliss ennobled by virtuous conduct and perfect love has sanctity and fruitfulness therein.

4. इललतँन् इलवल् माण्पानाल् उल्लतँन् इल्लवल् माणाक्कटै ॥ ६-१

ब्रूहि का नु भवतीह रिक्तता गेहिनी गुणगणान्विता यदि ।
सा हितेतर कुमार्गगा भवेत् का हि वा मनुज तेऽद्य पूर्णता ॥

पत्नी यदि धर्मपथगामिनी हो तो किस वस्तु का अभाव है, यदि वह अपथ-चारिणी हो तो तुम्हारे पास बचा ही क्या है ?

भार्यं सद्गुणसंपन्नयँकिल् इल्लात्ततँन्तु तान् ।
अवल् निर्गुणयाणँकिल् उल्लतुं पिनँयँन्तुवान् ॥

What is it that you lack if your wife is virtuous ? Of what avail is what you possess if she is vicious.

5. अमियतिनुं आरर इनिते तं मक्कल् शिरु कै अलाविय कूय् ।। ७–४

मण्डमालोडितं स्वापत्याँगुलीभिरितस्ततः ।
आस्वाद्यतरमेव स्यात् पित्रोः पीयूषयूषतः ।।

(माता पिता को) अमृत से भी वह माँड स्वादिष्ठ लगता है जिसको अपने बच्चे अपनी नन्ही नन्ही अंगुलियाँ डालकर फेंट चुके हों।

अम्ममार्कु पयं कञ्ञि इष्टमाणमृतत्तिलुम्।
कुञ्ञू मक्कल् विरल्तुंपु काँण्टिलक्कि मरिक्कुकिल्

Far sweeter than nectar is the gruel stirred by the tiny hands of one's own progeny.

6. कुयंलिनितु याय् इनितु एँन्नप तं मक्कल् मयलैच्चौल् केलातवर् । ७–६

वीणारवश्च मधुरो मधुरश्च वेणुः शंकात्र केति सततं ननु ते वदन्ति ।
येषाँ नु कर्णविवरे दुरदृष्टरुद्धे स्वापत्यजल्पनशतं पतितं न हि स्यात् ।।

"वीणा का स्वर मधुर है। वेणु का नाद अधिक मीठा है" ऐसे, वे ही बोलेगें जिन्होने अपने बच्चों की तोतली वाणी नहीं सुनी है।

"कुयलूत्तू महाकेमं केममाय् वीणवायन" ।
मक्कल् तन् कौँचल् केल्क्कात्त दुर्भगर् चौल्वतिङ्ङने

"Ha, how sweet is the pipe ! Wonderful note comes out of this lute." These are the words of those who have never heard the lisping prattle of their own children.

7. अकनमन्तुं शंय्याल् उरैयुं मुकनमन्तुं नल् विरुन्तु ओंपुवान् इल् ॥ १-४

लक्ष्मीस्तस्य गृहे तिष्ठेत् प्रसन्नेन हि चेतसा ।
प्रत्यहं यस्तु सेवेत प्रसन्नवदनोंतिथीन् ॥

प्रसन्नवदन होकर अतिथियों को विशिष्ट सेवा करने वाले के भवन में प्रसन्न चित्त लक्ष्मी स्थायी रूप से विराजमान रहती है ।

ऐरंर उलप्रीति कैक्काँण्डु लक्ष्मी देवि वसिप्पताम्
चिरिच्चतिथिसत्कारं एँन्नुं चैय्युन्नवन्गृहम् ॥

Delighted at heart, Goddess of Fortune will take up her permanent abode in the house of the man who serves his guests with sumptuous feast with a cheerful face.

8. अकनमन्तुं ईतलिन् नन्रे मुकनमन्तुं इन् चौल्लनाकप्पॅरिन् ॥ १०-२

प्रसन्नवक्त्रस्य नरस्य संतत प्रशाँतिरम्यं मधुराभिभाषणम् ।
अवेहि दानात् अपि सज्जनादृतात् प्रसन्नचित्तेन समर्पितादृरम्

प्रसन्नवदन होकर मधुर आलाप करना प्रसन्नचित्त से मुक्त हस्त दान करने की अपेक्षा अधिक भव्य समझा जाता है ।

चिरि तूकु मुखत्तोटै एँन्नुं मधुरभाषणम् ।
प्रीति कैक्काँण्डु दानङ्ङल् नल्कुन्नतिल् मिकच्चताम्

rance of sweet words with a smiling face surpasses excellence even a liberal gift tendered with a ıeart.

9. मरवर्कं माशरराक्रॅण्मै तुरवर्कं तुन्पत्त॒ल् तुप्पांयार् नट्पु ॥ ११–६

बन्धुतां दोषमुक्तानाँ मा विस्मर कदाचन ।
आपदुद्धारकाणाँ च सौहार्दं मा त्यज स्वयम् ॥

निर्दोष चरित्र वाले सज्जनों की मैत्री को कभी न भूल जाओ। आपत्काल में जिन्होंने तुम्हारी सहायता की उनका साथ कभी न छोड़ो ।

कुर तीन्नँवर्तंन् मैत्रि मरवक्कऱ्ताँरिक्कलुम् ।
आपदुद्धारकन्नमारँ प्पिरिञ्ञ्ओटरुतॅन्नुमे ॥

Never forget the affection of men of spotless character. Never abandon the friendship of those who supported you in the times of adversity.

10. नन्रि मरप्पतुनन्रन्रु नन्रल्लतु अन्रे मरप्पतु नन्रु ॥ ११–८

विस्मर्तव्यो नैव नैवोपकार: विस्मर्तव्यस्तत्क्षणे चापकार:

उपकार को भूल जाना अच्छा नहीं है। अपकार को उसी क्षण भूल जाने में भलाई है ।

उपकारं मरन्नीटॉल्लतु नन्नल्ला ॅरिक्कॅलुम् :
अपकारं मरक्केणमप्पोंये, नन्म कैंवरान् ॥

It is not proper to forget a help received. It is better to forget an evil done unto you immediately.

11. उलकत्तोड्ड ओट्ट ओयुकल् पल करूं कल्लार् अरि विलातार् ॥ १४-२०

अज्ञा एव हि ते गृन्थशताध्ययनपण्डिता: ।
अनभिज्ञा जनस्थानसमाजनयवर्त्मसु ॥

सैंकडो गृन्थों का अध्ययन करने पर भी समाज के साथ समरसपूर्ण व्यवहार जो कर नहीं सकता वह मूर्ख ही है ।

नाट्टाचारप्पटिक्कॉट्टूं नटक्कानरियात्तवर् ।
पठिच्चू पलतुं पक्षे मूढरेन्नरियप्पट्टुम् ॥

One may have learned many things. Still he is ignorant if he is unable to accommodate himself to the way of the World.

12. अरन् आक्कं वेण्टातान् एन्पान् पिरनाक्कं पेणातु अयुक्करुप्पान् १७-३

अन्यस्मै यद्यसूयेद्विभववरवते प्रीतिशून्यश्च चित्ते ।
धर्मार्थासक्तिहीन: स मनुजपशुरित्येव कथयेत नूनम् ॥

यदि कोई दूसरों की समृद्धि देखकर प्रीति का अनुभव किये बिना जलने लगता है तो उसके बारे में लोग यही कहेंगे कि यह बेचारा न तो धर्म को मानता है न कि आर्थिक उन्नति को भी ।

धर्मार्थासक्तिहीनन् तान् परन्रैयभिवृद्धियिल् ।
प्रीतियिल्लायकयुं कण्णुकटियुं कौण्टुलञ्ञवन्

If any one does not rejoice in the prosperity of another but feels jealous of him, he is sure to be ridiculed as wanting in the desire for a virtuous flourishing life.

13. शिरिरन्पं वँः कि अरनल्ल शँयारे मरिरन्पं वेण्डुपवर् ॥ १८–३

धार्मिकं परमानन्दं काँक्षता ऽधार्मिकी क्रिया ।
स्वप्नेऽपि कथमिष्येत लौकिकानंददायिनी ॥

परम मोक्ष को प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले संत साँसारिक सुख की कामना से प्रेरित होकर अधर्म नहीं करेंगे ।

परमानंदमिच्छिक्कु महान्मारीरूनालुमे ।
अधर्मं चैय्वतिल्लाट्टू लोकिकानंदमग्नराय्

Those who aspire beatitude will never stoop to do unrighteous things, misled by worldly pleasures.

14. अयुक्करु अकन्रारू इल्लै अःतु इल्लार पॅरुक्कत्तिल्
तीन्तारू इल् ॥ १७–१०

असूयादुष्टान्तःकरणकलुषाः प्राप्तविभवाः ।
तदुच्छेदात् संपद्विरहविधुराः नैव विदिताः ॥

ऐसा कोई नहीं जो असूया करने पर भी महान बना हो, ऐसा भी नहीं कि असूया से मुक्त होकर महान नहीं बना हो ।

लोकत्तिलॅवनुं कण्णुकटियुल्ळ्कोण्डु मेन्मयुम् ।
अतु तीरॅ वॅटिञ्ञट्टू तायच्चयु वन्नतिल्लहो ॥

Envious men are never known to have become great, nor those who are free from envy have failed to achieve greatness.

15. अ:कि अकन्र अरिवॆन्नाँ यार्माँट्टू वॆ कि वॆरिय शॆयिन्। १८–५

सूक्ष्मबुद्धे र्बहुज्ञस्य किंफला शास्त्रविज्ञता ।
लोभसंमूढचित्तस्य कुकृत्यं कुर्वतः स्वयम् ।।

यदि कोई लोभवश दूसरों के साथ अपने दैनिक व्यवहार में मूर्खता का काम करता हो तो उसके गहन एवं बिस्तृत अध्ययन से क्या लाभ हुआ ।

सूक्ष्मविस्तृतविज्ञानं नेटियुंफलमेन्तुवान् ।
लोभप्रेरितनाय् विड्ढिवेषं पलतु कॆट्टू किल् ।।

Of what avail is an intensive and extensive study of many a text, if actuated by covetousness anyone commits acts of stupidity in his dealings with everyone.

16. अ:कामै शॆल्वत्तिकुं यातॆनिन् वॆ:कामै वेण्डुम् पिरन् कैप्पॊरुल १८-८

संपत्तेर्यदि पृच्छसीह लघूतासंरोधनं कारणम् ।
लोभाभावमवेहि वित्तनिचये यत्नात् परैरर्जिते ।।

यदि पूछा जाय कि संपत्ति के ह्रास को कैसे रोकें तो यही उत्तर है कि दूसरों की संपत्ति को लोभ की दृष्टि से मत देखो ।

कारणम् केल्क सम्पत्तू कुरयातॆयिरिक्कुवान् ।

परन्टॆ पॊरुलिल् तॆल्लुम् कॊतियिल्लातिरिक्कुक

If it is asked what prevents the dwindling down of wealth, the answer is, do not cast coveting glances at another man's wealth.

17. एतिलार् कुररम् पोल् तम् कुररम् काण् किर्पिन् तीतुण्टो मन्नुम् उयिर्क्कु ॥ १९-१०

संसारे क्वचिदप्यहो ऽत्र दुरितं दृश्येत नैवाधुना ।
स्वस्यैवात्मनि वीक्षितो यदि भवेत् दोषः परेषामिव ॥

जिस प्रकार दूसरों के दोषों को समझ लेते हैं, यदि लोग उसी प्रकार अपनी अंतरात्मा की ओर दृष्टि फेरें और अपने दोषों को समझ लें तो क्या इस ससार में बुराई टिक सकती है ?

परनुल्लॉरु कुररम् पोल् काणुकिल् तन्र कुररवुम् ।
तिन्म लोकत्तिलिन्नक्कु निरञ्ञॅङ्ङू परक्कुमो ॥

If people were to see within and realize their own mistakes in the same manner as they observe others' faults can there be evil in the world ?

18. पयनिल पल्लार्मुन् शॉल्लल् नयनिल नट्टार्कण् शॅय्तलिन् तीतु ॥ २०-२

संमुखे बहुजनस्य सन्ततं निष्प्रयोजनविकत्थनं खले ।
मित्रसम्मुखकृतात् कुचेष्टितात् गर्हणीयतरमेव मे मतम्

कई लोगों के सामने बेमतलब की बात करना अपने प्रिय बन्धुओं के साथ दुर्विनीत व्यवहार करने से भी बुरा है ।

क्कूट्टुकारुटॅ मुंपाकॅ काणिच्च कुसृतिक्कु मेल् ।
मोशमाणु निरर्थोक्ति पलमुन्निलुरय्क्कुकिल् ॥

Speaking trash in the presence of many persons is worse than acting ungraciously towards one's own near and dear

19. इलनॅन्रु तीयवै शॅय्यर्क शयि्यन् इलनाकुं मरंरु पॅयत्तू॓ ॥ २१-५

दीनो हीनः किलाहं किमु न बहुधनान्यर्जये हेयकृत्यैः ।
नैवं त्वं चिन्तयेर्यद्यभिलषसि पुनर्दैन्य पीडाँ न तीव्राम्

" मैं तो दीन हीन हूँ " इस बहाने से दुष्कर्म मत करो । करने पर दारिद्र पीडा तीवृतर होगी ।

एय तानिवनॅन्नोत्तू॓ पापकर्मङ्ङल् चॅय्यॉला ।
चय्ताल् काँ टिय दारिद्रयं पिन्नयुं परुकीट्टुमे ॥

Consoling yourself saying "I am but an indigent fellow" commit no evil deeds, lest you shold become more impoverished still.

20. आररुवार् आररल् पशि आररल् अप्पशियै माररुवार् आररलिन् पिन् २३-५

तपोधनानाँ प्रथितं महत्वं क्षुधासहत्वैक निबन्धनं चेत् ।
परक्षुधाँ येऽपनयन्ति तेषाँ सताँ महत्वादवरं तदा स्यात्

तपस्वी लोग भूख पर विजय पाकर सम्मानित होते है । दूसरे लागों की क्षुधा पीडा मिटाने वालों का आदर उससे भी अधिक है ।

विशप्पिनॅ वॅटिञ्ञॅररं महत्वं नेटिट्टुं यति ।
अतिलेरिय माहात्म्यं अन्यन्रे पशि मारिरयाल् ॥

Saintly men gain esteem by conquering hunger. Can't those who alleviate the pangs of hunger of others gain a greater esteem. ?

21. पाँरूलररार पूप्पर् ऑरुकाल् अरूलररार् अररार् मररातलरितु २५-८

नष्टश्रियः पुनरपि प्रभवेयुराप्तुम् पूर्वाधिकाँ श्रियमदृष्टवशात् कदाचित् ।
कारुण्य सद्गुण विहीनतयाधमत्वं प्राप्ताः सदैव कथिता बत मुक्तिशून्याः

आज जो निर्धन बन जाते हैं कल उनके फूलने फलने की सम्भावना है, परन्तु जो कारुण्यरहित होते हैं उनका उद्धार कभी संभव नहीं हो सकता ।

पिन्नँ ऐन्न किलुं पूक्कुं इन्नु निर्धननायवन् ।
नष्टकारुण्यनेन्नेन्नुं नष्टनाँ मुक्ति कैवरा ॥

Those who become destitute today may bloom into prosperity to-morrow, but those who are devoid of benevolence are doomed for ever.

22. तन्नून् पॅरुक्ककुं त्तान् पिरितु ऊनुणपान् एँङ्डनं आलुम् अरुल् २६-१

स्वमेदोवृद्धयर्थं पचति बत भुंक्ते च पिशितं
नरः क्रूरस्तस्मिन्नहि भवति कारुण्यकणिका ॥

अपने माँस की वृद्धि के लिये अन्य प्राणियों का माँस खाने वाले मनुष्य में कारुण्य रूपी गुण कैसे हो सकता है ?

तन्रँ माँसं पॅरुत्तींटान् मररू माँसमशिप्पवन् ।
कारुण्य गुण सम्पन्ननावतॅप्पॉयुतॅङ्ङने ॥

How can he who consumes the flesh of other living beings, solely to increase his own flesh, ever possess the good quality of kindness ?

23. चुटच्चुटरू पौन् पोल् ऒलि विडुं तुन्पं चुटच्चुट नोर्किर्पवर्क्कु २७·७

स्वर्णं सन्तप्यमानं ज्वलति समधिकं श्यामिकामुक्तमेवं ।
मर्त्यो दुःखाग्निदग्धो व्यपनयति तपस्तेजसा पापराशिम् ॥

बार बार अग्नि में सन्तप्त स्वर्ण की चमक बढ़ती जाती है, उसी तरह दुःखरूपी अग्नि में बार बार सन्तप्त मनुष्य की आत्मा अधिक पवित्र हो जाती है ।

काञ्चियाल् कनकं कान्तियान्नुं नन्नाय् तिलङ्ङुम ।
अतुपोल् तॆलियुं मर्त्यन् नॊन्तु वाटि वलञ्ञवन् ॥

The hotter the fire in the refinery the greater is the refulgence of the gold that emerges from it, the greater the sufferings that a man undergoes the purer his soul becomes.

24. इलर् पलराकिय कारणम् नोपार् शिलर् पलर् नोलातवर् २७-१०

बहवो दीनताग्रस्ता व्यक्तमेवात्र कारणम् ।
तपः शून्या हि भूयांस स्तप्यन्ते विरलाश्च यत् ॥

संसार में अभावग्रस्तो की संख्या इसलिए अधिक हैं कि तप करने वाले कम और उससे दूर रहने वाले अधिक हैं ।

इल्लाय्म वलरॆप्पेर्क्कुं मन्निल् एन्ताणु कारणम् ।
श्रमशालिकलल्पं अतिल्लात्तवरॆन्नयो ॥

The majority of the world's population is in the grips of the devil of poverty because only very few really court sufferings in the form of austerity and the rest dread it.

25. कणै कौंटितु याय् कोट्टु शॅव्वितु आँकन्न विनै पट्टु पालाल् कोलल् २८-९

ऋजुः शरोऽयं परमर्मघाती गीतामृतस्यन्दि ततं नु वक्रम् ।
गुणागुणौ संप्रति निश्चिनुध्वं सत्कर्म दुष्कर्मभिरेवनॄणाम् ।।

शर तो आकृति में सीधा है परन्तु वह लोगों को विष डालता है । याय् नाम की वीणा आकृति में टेढी हैं परन्तु स्वर्गीय संगीत उसमें से निकलता है । किसी के भी गुण–अवगुण आकृति में नहीं बल्कि कार्य में निर्भर रहते हैं ।

नोण्ट बाणमतिक्रूरं मधुरं बलवान्नं याय् ।
नन्मयुं तिन्मयुं कार्यं कण्टु तान् निश्चयिक्कणम्

The arrow, though straight in shape, is cruel in its actions and the lute though crooked in appearance produces heavenly music. The goodness or other wise of every thing has to be judged on the basis of actions and not appearance.

26. मयित्तलुं नीट्टलुं वेण्टा उलकं पयित्ततु ओयित्तू विटिन् । १८-१०

त्यज्येत यदि निःशेषं कर्म लोक विगर्हितम् ।
किं साध्यं मुण्डनश्मश्रुजटाजूटादिभिस्त्वया ।।

मुण्डन की या दाढी बढाने की आवश्यकता नहीं पडेगी यदि संसार के द्वारा निन्दित काम न किये जायें ।

तल मॊट्टमटिक्केण्ट तादि नीट्टेण्टॉरिक्कलुम् ।
नाट्टार् निन्दिच्च कार्यङ्ङल् तिट्टमाय् विट्टायिक्कुकिल्

Neither tonsure nor the growing of beard or matted and twisted hair becomes essential if what is condemned by the world is eschewed.

27. उल्लत्तालुल्ललुं तीते पिरन् पॉरुलै क्कल्लत्ताल् कल्वें ऍनल् । २६-२

यद्वत् पापकरं परस्वहरणं सद्भिः सदा गर्हितं ।
चित्ते तत्प्रविचिन्तनं च घृणितं तद्वद्वयं मन्महे ॥

पडौसी का धन छल से अपहरण करने का विचार भी अत्यन्त पापकर हैं ।

परन्रॅ पॉरुल् कवकुन्न तॅन्रयुं निद्यमल्लयो ।
अतुपोलतिनिद्य तान् उल्लत्तिङ्कलतोर्प्पंतुम् ॥

Very sinful indeed is even the thought. "I shall fraudulently steal my neighbour's wealth."

28. शॅल्ला इटत्तुच्चिनं तोतु शॅल्लिटत्तु इल् अतनिन् तीय पिर । ३१-२

अस्थानरोषो विदितो नु हेयः ।
स्थाने कृतात् गर्ह्यतरं च नान्यत् ॥

अस्थाने रोष अति निन्द्य है । उचित स्थानों में भी उससे अधिक निन्दनीय कुछ भी नही है ।

चीररम् चॅल्लात्तिटत्तेररम् निन्द्यमाणिल्ल संशयम् ।

अतिलुं निन्द्यमिल्लॉन्नुं चॅल्लुमॅन्नुळ दिक्किलुम् ॥

Where wrath is ineffectual it is indeed an evil, there is nothing worse than it even where it is effective.

29. इन्ना शयतार श्रौरुत्तल् अवर् नाण नन्नयं शेय्तु विटल् ॥ ३२-४

दण्ड्येरन् कथमुच्यतां अविरतं दुष्कर्म कुर्वंति ये।
कुर्याः सद्व्यवहारमेव न चिरात् जिह्रीयुरेव स्वयम् ॥

दुष्कर्म करने वालों को सफलता पूर्वक दण्ड देने का एकमात्र उपाय उनको अपने सद्व्यवहार से लज्जित कराते हुए दोनों व्यवहारों को भूल जाना है।

मटक्कानटवुण्टोन्नु तिन्म चेय्युन्न क्रूटरे।
अवर् नाणिच्चिदुम्मट्टु नन्म चेय्तु मरक्कुक ॥

To punish effectively those who frequently indulge in evil actions towards you, make them ashamed of themselves by your benevolent deeds and forget both.

30. कामं वेकुलि मयक्कं इवै मून्रन् नामं केटक्कॅटुम् नोय् ॥ ३६-१०

कामः क्रोधस्तथा मोहो नरस्य रिपवस्त्रयः।
निश्शेषम् तेषु नष्टेषु भवेत्तस्य कुतो रुजा ॥

काम, क्रोध, और मोह इन तीनों के नाम भी नहीं रहे तो समस्त रोगों का अंत हुआ समझो।

दुष्टवैरिकलाँ कामक्रोधमोहङ्ङल् मून्नुमे।
नामावशिष्ट मायेन्नाल् रोगमेल्लाम् नशिच्चिदुम्

Lechery, loss of temper, lack of sense, if their very names disappear, all your sickness comes to an end.

धर्म खण्डे तु वर्तन्ते श्लोका "नृजल" सम्मिताः ।
संगृहीताः पुनस्त्रिंशत् अनुवादचतुष्टये ।।

अर्थ खण्डः पुनः श्लोकशतसप्तकभासुरः ।
चिता'श्चित' मिताः श्लोका अनुवादकृता स्वयम् ।

श्लोकैः "नृमुख" सम्पन्नैः प्रकामं राजतेऽधुना ।
कामखण्डो यतो दत्ता 'आदित्य' प्रमिता इह ।।

धर्म खण्ड में कुल ३८० श्लोक हैं। हमने उनमें से ३० श्लोक चुन कर यहाँ अनुवाद किये है। आगे अर्थ खण्ड है इसमें कुल ७०० श्लोक हैं। जिनमें ६६ श्लोकों के अनुवाद आगे दे रहे हैं। तीसरा काम खण्ड है जिसमें २५० श्लोक हैं। हम उसमें से १२ श्लोकों का अनुवाद दे रहे हैं।

The sacred Tirukkural contains 380 verses in all in the I section on VIRTUE of which we have selected 30 and translated in the previous pages. The second section is on WEALTH which consists of 700 verses in all. In our translation we have selected 66 ver ses. The third section is on LOVE which contains 250 verses. We have selected 12 from them

अर्थ खण्ड

31. चँवि कै प्पच्चॉर पॉरुक्कु पराणुटै वेन्तन् कविकैक्कीय् त्तंकुं उलकु ॥
३९-६

श्रावं श्रावं परुषवचनान्यस्तरोषस्य राज्ञः ।
छत्र च्छाया भुवि नु रमते मेदिनी सागरान्ता ॥

अपने अमात्यो और अन्य हितैषियों की कटु आलोचना की बातों को शान्ति पूर्वक सुनने की क्षमता वाले शासक अपनी छत्र छाया में सारे संसार को ऐकत्रित कर लेंगे ।

मन्त्रि चॉल्लुं कटुं वाक्कु चँवि कच्चुं पॉरुत्तिटुम् ।
मन्नवन्रं कुटक्कीयिल् तङ्कून्नू लोकमनयुम् ॥

The entire world will seek refuge under the royal umbrella of the chastened king who patiently hears the bitter words of criticism (of his ministers and other well wishers.)

32. तामिन्पुरुवतु उलकिन्पुरक्कण्टु कामुरुवर कररिनुतार् ४०-६

लोकस्य वीक्ष्य रति मात्मरतौ च विद्यावृद्धौ विशेष विपुलीकृतसिद्धिहेतौ ।
पूर्वाधिकां समनुभूय च तत्र तुष्टिं विद्यान्विताः पुनरपि प्रकटोत्सवाः स्युः ॥

यह जानकर कि जिसमें वे स्वयम् आनन्द पाते हैं वह विद्या संसार को भी आनन्द प्रद अनुभूत होता है, विद्याव्यसनी अपनी विद्या का पूर्वाधिकव पोषण करते हैं ।

तङ्कल्किन्पं तरुं विद्य लोकक्कुं मतुपोल् प्रियम् ।
नल्कुन्नतु निनच्चेररं इन्प कॉल्लुन्नु पण्डितर् ॥

Seeing that the whole world takes delight in what is delectable to them (viz learning) scholars cherish still more their pursuit of learning.

33. उलरन्नु मात्तिरैयर् अल्लाल् पयवाक् कलरनयर् कल्लातवर् ।। ४१-६

अस्तित्वव्यपदेशमर्हति ततो नान्यत् फलं विद्यते।
विद्याशून्यमविज्ञमूषरभुवो भिन्नं न मन्यामहे ।।

ऊषरभूमि और अनपढ़ दोनों के बारे में हम केवल यही कह सकेंगे कि "वे हैं" परन्तु दोनों निष्फल हैं।

उण्टॅन्नु परयाँ रण्टुम् फलबत्तल्ल तॅल्लुमे ।
अविद्वान् तरिशाँ भूमि भेदमॅन्तुण्टु चॉल्लुवान् ।।

As in the case of an arid wasteland with regard to the unlettered we can say only this that they exist, both are unproductive.

34. नुण्मान् नुयैपुलं इल्लान् एँयिल् नलं मण्णुमाण् पुनै पावैयररु । ४१-७

सद्ग्रन्थाध्ययनाप्त सूक्ष्म विशदज्ञानेन रिक्तस्य तत्।
सौन्दर्य बत वर्णचित्रित सुधामृन्मूर्ति देश्यं स्मृतम् ।।

चाहे जितना ही सुन्दर क्यों न हो गहन अध्ययन से प्राप्त होने वाले सूक्ष्म एवं विशद ज्ञान से रिक्त अनपढ वर्णचित्रित मिट्टी की मूर्ति से भव्यतर नहीं हो सकता।

वर्णं पूशिय मण्णावयॅक्कुल्ल चेलुरर भगियुम् ।

विद्ययिल्लात्त मर्त्यन्रॅ कॉयुत्तोरयकुं समम् ।।

Lacking in the deep and penetrating knowledge derived from an extensive study the unletterred is no better than a clay doll painted in gorgeous colours, though he may be most comely in appearance.

35. नल्लार्कण पट्टवरुमैयिन् इन्नाते कल्लार्कण् पट्ट तिरु ॥ ४१-८

संपत्तिर्वत मूर्खहस्तपतिता सन्तापकृन्मे मता
दारिद्र्यादपि दुःखसंचय करात् अभ्यस्त विद्यस्य वै ॥

अनक्षर की संपत्ति विद्वानों को निर्धनता की अपेक्षा अधिक दुःखजनक होती है ।

विद्वान्मारुटँ दारिद्र्य पीडयँक्काट्टिलुं परम् ॥
मोशमाणाँरु मूढन्रँ पँरुकुं धनसंचयम् ॥

Wealth in the hands of the illiterate can cause more sorrow than the poverty that befalls the learned.

36. वरुमुन्न कांवातान् वाय्कै एँरिमुन्नर वैत्तूरु पोलक्कँदुम् ॥ ४४-५

दोषेष्वप्रतिवारितेषु नितरां संपन्नता देहिनां ॥
दीप्ताऽग्नेः पुरतोऽतिशुष्कतृणवत् भस्मी भवेदंजसा ॥

दोषों को पहले से ही जो निवारण नहीं करते उनका जीवन धधकती आग के सामने रखे हुऐ तिनके के समान भस्मी भूत हो जाता है ।

दोषङ्ङ्ळँ वरुं मुम्पँ त्तटुक्कात्ताँरु जीवितम् ।
चाम्पलामँरियुं तीक्कु मुम्पिल् वैक्कोलु पोलवे ॥

The career of those who never care to check their faults beforehand shall perish like a dry straw in a blazing flame.

३७. अरियवररुलँळाम् अरिते पॆरियारैप्पेणि त्तमराक्कॊलल् ।। ४५-३

सन्तश्चेदनुकूलिताः सविनयं संप्रीणिताः सेवया ।
दुष्प्रापं खलु लीलयैव शुभदं वस्तु त्वयासादितम् ।।

सज्जनो का सम्मान करके उनको अपने आत्मीय बनाना समस्त दुर्लभ साधनाओं से श्रेष्ठ होगा ।

दुर्लभात् दुर्लभं वस्तु चॊळ्ळामॊन्नुण्डु केल्क्कुक ।
सज्जनङ्ङलॆ मानिच्चु तङ्ङल् तन् बन्धुवाक्कुक

Prizing the company of the great and making them one's own kinsmen is the rarest of all achievements.

38. पल्लार् पकै कॊललिर् पत्तडुत्त तीमैत्ते नल्लार् तॊटर् कैविटल् ।। ४५-१०

शंकात्र का बहुभिरुद्भटबाहुवीर्यैः साकं समाकलितदुर्वह शत्रुतायाः
सत्संगतिच्युतिभवः कथितोनु दोषो विज्ञैरसौ दशगुणाधिकदुर्विपाकः

कई लोगों के साथ शत्रुता बरतने पर जो बुरा परिणाम निकलता है ।
उसका दशगुना दुष्परिणाम सज्जनों का संपर्क टूट जाने से हो सकता हैं

पलरोटु पिणक्कत्ताल् उळ्ळतिल् पत्तिरट्टियाम् ।
तिन्म सज्जन सन्मैत्रि कैवॆटिञ्ञु लभिप्पतिल् ।।

Snapping of ties with the good causes ten times more sorrow than the incurring of enmity with many foes.

39. निलत्तियल्पाल् नीर् तिरिन्तरराकु मान्तक्कु इनत्तियल्पाकु अरिवु
४६-२

यत्र वा वहति वारि भूतले तद्रसं प्रकृतिमप्यवाप्नुयात् ।
विज्ञता ऽऽचरणा शुद्धतादिकं संगते रनुगुणं तथा स्मृतम् ॥

जिस भूमि से होकर बहता है उस भूमि की प्रकृति के अनुरुप पानी मैं रुप रस आदि गुण बदलते है । इसी प्रकार जिन जिन व्यक्तियों के साथ आदमी का सपर्क होता है। उनकी प्रकृति के अनुरूप उसकी विज्ञता रहन-सहन आदि परिवर्तित होते हैं ।

निलत्तिन् प्रकृतिक्केरर माररं वॅन्तत्तिलॅन्न पोल् ।

कूट्ट् कॅट्टिन् गुणं पोलॅ मर्त्यक्कु ह्ररिविङ्कलुम् ॥

Just as water varies in its taste colour etc depending on the nature of the soil so also the receptive capacity of men is based on that of the company they keep.

40. एॅण्णित्तुणिक करुमं तुणिन्तपिन् एॅण्णुवं एॅन्पतु इयुक्कु ॥ ४७-७ ॥

पूर्वं सञ्चिन्त्य सर्वं स्वहृदि चतुरुपायादिकं शास्त्ररीत्या ।
कर्तव्य कार्यजातं तदनु खलु समारभ्यतां सत्फलार्थम्
कृत्वा नैवं यदि प्रत्युत कृतिततिरारभ्यते चिन्तयेऽहं
पश्चादावश्यकं चे दिति दुरितकरं निष्फलत्वाय वा स्यात् ॥

उपाय आदि विषयों को पहले भली भाँति सोचकर प्रत्येक कार्य किया जाय बाद में सोचा जायेगा इस विचार से कार्य आरम्भ करना मूर्खता है ।

वयि चिन्तिच्चु कार्यङ्ङल् पिन्नॅच्चॅय्तु तुटङ्ङणम् ।
तुटङ्ङिप्पिन्नॅ मार्गङ्ङल् आरायुन्नतु कुररमाम् ॥

Ponder over the ways and means pros and cons and then start your endeavour; it is foolish to start an action postponing the thought over ways and means to a later stage.

41. विनैवलियुं तन्वलियुं माररान् वलियुं तुणैवलियुं तूक्किच्चॅयल् ४८-१

शक्तिः कर्मणि यावती समुचिता या वा निसर्गादिह
स्वात्मन्यस्ति च या सुहृद्बलयुते शक्तिः प्रतिद्वन्द्विनि ।
शक्तिः स्वीयसुहृत्सु बान्धवगणे साहाय्यसज्जे तथा,
सर्वासाँ तुलनेन कार्यमखिलं कुर्वन् जयी सर्वदा ॥

प्रत्येक कार्य चार प्रकार की शक्तियों की परस्पर तुलना के उपरान्त किया जाये। कार्यौचित शक्ति, अपनी निसर्ग शक्ति, प्रतिद्वन्द्वी एवं उसके मित्रों की शक्ति तथा अपने मित्रों की शक्ति।

वेलय्क्कुचितमाँ शक्ति तन् शक्ति रिपुशक्तियुम् ।
तुणयुं मुयुवन् तूक्कि नोक्किक्कार्यं तुटङ्ङणम् ॥

All actions suould be begun after weighing well the comparative merits and force of the four fold energy that attends every action namely the energy necessary for the performance, one's inherent energy, that of the opponent accompained by his allies and that of one's own allies.

42. पीलि पॅय् शाकाट्टुम् अच्चिरुम् अप्पण्टम् चाल मिकुत्तुप्पॅयिन् । ४८-५

बर्हसंघातभारेणाप्यक्षदण्डो विभज्यते ।
लघुभिर्बहुभिः पिष्टा बलिष्ठोऽपि निपात्यते ॥

हल्के मोर पंख भी बहुत अधिक रखने पर शकट का अक्षदण्ड संभवतः भग्न हो जाता है। चाहे दुर्बल ही क्यों न हो अनेक एक साथ आक्रमण करके बलिष्ठ को भी परास्त कर सकते हैं।

मयिल् पीलि निरच्चालुं अच्चुतण्डु मुरिञ्ञिटाम् ।
चॅरियोर् पलरुम् चेन्नुं बलियोनॅत्तकर्त्तिटाम ॥

If overloaded with even the light feathers of peacock the axle of the cart is likely to be broken, Many weak men collectively can conquer even a mighty man.

43. आकारु अलविट्टितायिनुं केटिल्ले पोकारु अकला क्कटै ।। ४८—८

अल्पेनायेन को दोषो व्ययो यावन्न वर्धते ।

सीमित आय से क्या बिगड़ता है जब तक व्यय की वृद्धि न हो ?

वरवॉट्टु कुरञ्ञालुम् तरक्केटिल्ल तॅल्लुमे ।
चिलवन्न पॅरुक्कातॅ निलयिल् तन्नॅ निल्क्कुकिल् ।।

A limited income need not cause anxiety if the expense does not swell up.

44. पकल् वॅल्लुं कूकैयैक्काक्कै इकल् वॅल्लुम् वेन्तक्कुं वेण्टुम् पॉयुतु ।। ४६—१

जीयते हि दिवा काकेनोलूको बलवानपि ।
प्रहरंस्तु यथाकालं शत्रुं जयति दुर्जयम् ।।

दिन में कौआ उल्लू को परास्त कर देता है। बली शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले राजा लोग उचित समय की प्रतीक्षा करें ।

पकलिल् चॅन्नॅतिक्कुंन्न काक्क वॅल्लुन्नु मूङ्ङये ।
कालं नोक्कि नृपालन्मार् ऐतिर्त्तालि वॅरिर तन्नॅयाम् ।।

In the broad daylight the owl is easily overcome by a crow; a king who desires to cause a crushing blow to his enemies must seek the opportune moment.

45. अञ्चामै अल्लाल् तुणै वेण्टा ऍञ्चामै ऍण्णि इटत्ताल् चॅयिन् ।। ५०-७

निर्भीकात् हृदयान्तरात् किमपरैः स्यात्साधनैरादृतैः
निश्शेषं प्रविचिन्त्य कृत्यनिचयं स्थाने श्रमं कुर्वतः ।।

सब विषयों पर विचार करके उचित स्थान में परिश्रम का आरम्भ किया जाय तो निर्भयता के सिवा अन्य साधनों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ।

तुण मररॉन्नु वेण्टल्लो पेटियिल्लायूकर्यॅन्निये ।
निश्शेषं कार्यमोर्त्तॅररं श्रमं स्थानत्तु चॅय्युकिल् ।।

Save dauntlessness no other accessory need be sought if, after thorough consideration one starts one's operations at the proper site.

46. गुणं नाटि कुररमुं नाटि अवर्रुल् मिकैनाटि मिक्क कॉलल् ।।५१-४।

गुणदोषौ परिज्ञाय तारतम्यविवेकतः ।
गुणिनं दोषिणं वापि नरं निश्चिनु सर्वदा ।।

गुणों की जाँच कर लो; दोषों का निरीक्षण करो; समझ लो, किसका आधिक्य है; उसके अनुसार निर्णय करो ।

गुणवुं दोषवुं नोक्कि मेन्मयु ताय्चयुं तथा ।
तारतम्यप्पॅट्टुत्तिक्कॉण्टाल्त्तरं निश्चयिक्कुक ।।

Check up the good points; survey the weaknesses, examine which prevails over which and then judge.

47. तेरकं यारैयुं तेरातु तेर्न्तपिन् तेरुक तेरुम् पॉरुल् ॥५१-९॥

ग्राह्यो न कश्चिदपि सुष्ठ्वपरीक्षितश्चेत्
तीर्णे च विश्वसिहि योग्यपदे नियुक्ते ॥

पूरी परीक्षा किये बिना किसी को भी स्वीकार नहीं करना, चुन लेने पर उचित कार्य सौंपकर परिपूर्णतया उस पर विश्वास करना।

नल्लपोल् परिशोधिक्कातारॅयुं स्वीकंरिक्कॉला।
योग्ममां भरमेल्पिच्चु पूर्णमाय् विश्वसिक्कुक ॥

Without a complete test do not select anyone, after due selection put full faith in him assigning him a befitting job.

48. अरिन्तारिर च्चॅय्किपाॅकुं अल्लाल विनैतान् शिरन्तानॅन्रु एवपारिरन्रु ॥५२-५॥

यो जानाति समस्तकर्मसरणीः; यश्च प्रयत्नं सदा
कृत्वा विघ्ननिवारणे सफलतां प्राप्नोति मर्त्यः स्वयम्।
तस्मिन्नुत्तरदायिता नृपतिना देया; न तु स्वामिनि
स्निग्धः पूज्यतमश्च नन्वयमिति स्तोकप्रभावे नरे ॥

महत्वपूर्ण कार्य का दायित्व उन्हीं को दिया जाय जो सब तरीके जानते हों एवं सफलतापूर्वक प्रयत्न कर सकें; उनको नहीं देना जिनको अपने प्रिय के पात्र माने और जिनकी कुछ लोग भले ही पूजा करे।

अरिञ्ञाराञ्ञु चॅय्युन्न कॅल्पॅयुं भृत्यनॅन्निये।
इवनॅन् प्रियनॅन्नोत्तुं कार्यं दुर्बलनेकॉला ॥

Important tasks should be assigned only to those who know the methods thoroughly and are capable of executing them diligently till fruition and not to any favourite who may be hailed and esteemed (by some).

49. अलवलाविल्लातान् वाय्क्कै कुलवलाक्कोटिन्रि नीर् निरैन्दररु ।। ५३-३।।

संपत्तिः सँल्लपद्बन्धुबर्गरिक्तस्य देहिनः ।
वहद्वारीव कासारे सर्वतः संप्लुतोदके ।।

सल्लाप हेतु आकर घेरनेवाले बन्धुबर्गों से रिक्त मानव की संपन्नता किनारों से रहित तडाक में बहती हुई पानी की बाढ़ जैसी है ।

सल्लापत्तिनु बन्धुक्कल् इल्लात्तोरुटॆं जीवितम् ।
वॆल्लं करकविञ्ञाट्टुं कुलत्तिन्रॆं कणक्किलाम् ।।

The affluence in life of one devoid of kinsfolk gathered round him for friendly chat is like the gushing in of flooding waters into the lake where the encircling bund is missing.

50. अच्चमुटैयार्क्कु अरणिल्लै आंकिल्लै पॉच्चप्पुटैयार्क्कु नन्कु ।।५४-४।।

भीरुर्दुर्गसुरक्षितोपि लभते स्वान्ते न शान्ति पराम्
चेतो विस्मृतिशीलवान् सुधनिकोप्याप्नोति किं भावुकम् ।।

सुरक्षा की पूर्ण व्यवस्थाओं से सुसज्जित दुर्ग में भी कायर को चैन नहीं मिलेगा; समस्त साधन सम्पन्नता से भी भुलक्कड़ मानव सुख नहीं पाएगा ।

कोट्टय्क्ककमिरुन्नालुं पेटित्तॊण्टन् विरच्चिटुम् ।
एन्नुं विस्मृतिशीलन्नु गुणमिल्ल सुखत्तिलुम् ।।

No strong fort provides peaceful protection to the coward: no worldly possession offers blissful solace to those of forgetful nature.

51. इकयूच्चियिन् कँट्टारै उल्लुक ताम् तम् मकियूच्चियिन् मैन्तुरुम्पोयुतु ॥५४-६॥

हृष्यन् यद्यवलेपदग्धहृदयो भूयास्तदा स्मर्यताम्
पूर्वं तेन हि कारणेन दुरितग्राहार्दितानां कथा ॥

जब कभी कोई खुशी में घमण्डी होकर अपना कर्त्तव्य भूल जाए तब, पूर्वकाल में उसी कारण से सब की निन्दा का पात्र बनकर विनाश गति को प्राप्त लोगों का स्मरण करे।

स्वयं मोदिच्चु दर्पत्ताल् मॅय्मरन्नङ्ङिरिक्कवे ।

ओक्कणं मुम्पितिन्मूल नशिच्चवरॅयॉक्कॅयुम् ॥

When he is too elated and forgetful of his duties let everyone remember those who were ruined before, due to the same cause, and slighted by all.

52. कॉलैयिर् कॉटियारै वेन्दॉरुत्तल् पैङ्कूय् कलै कट्टतनोडु नेर् ॥५५-१०॥

राजा शक्ति य, दाततायिन इह प्रोद्यम्य खड्गं स्वयम्
शष्पोच्चाटनकर्म कर्षककृत सस्याभिवृद्ध्यै यथा ॥

राजा के द्वारा मृत्यु दण्ड देकर आततायियों को दबाना घास-पात हटाकर अनाज के पौधों को लहलहाने देने के समान हैं।

आततायिकलॅक्कॉन्नु शमिप्पिक्कुन्न मन्नवन् ।

कल वॅट्टि निलं पुष्टमाक्कुं कर्षकनॉक्कुमे ॥

Castigation of criminals by means of death sentence meted out by the king is on a par with the up rooting of weeds to allow the corn to flourish.

53. अल्लपॅट्ट्. आररातु अयुत कण्णीरन्रे शॅल्वत्तॅत् तेय्क्कुम् पटै ॥५६-५॥

निजप्रजानां विपर्दितानां असान्त्वनानां पतिताश्रुधारा ।
असंशयं हन्त नृपस्य संपद्विभेदने ऋश्चनतीक्ष्णधारा ॥

क्या पीडित प्रजाओं की आश्वासनरहित अश्रुधारा आरे की धारा की तरह राजा की सम्पत्ति को काट नहीं देती ?

अल्ललिल् पॅट्ट्. तोरात्त नाट्टार् तन्नश्रुधार तान् ।
नृपसम्पत्त्. तेय्क्कुन्नोररत्तिन्नुल्ल धारयाम् ॥

Does not the incessant flow of unappeased tears of sufferers under him, erode the riches of the king as if with a sharp file ?

54. इन्मैयिन् इन्नातु मुरै शॅय्या मन्नवन कोर् कीय् प्पटिन् ॥५६-७॥

दैन्यात् गर्ह्यतरा बुधैर्नु कथिता भोगप्रदायिन्यपि
श्रीमत्ता यदि शासने क्षितिपतेर्धर्मादपेतस्य चेत् ॥

अधार्मिक राजा के शासन में धनसंपन्नता दारिद्रय से भी अधिक गर्हणीय है ।

पणं वाय्पतु मोशंतान् पावमाय्प्पोवतिल् परम् ।
अधर्मरतनाम्मन्नन्नटिमप्पॅट्ट्. वायुकिल् ॥

Affluence under the subjugation of an unjust king is more despicable than poverty.

55. कडुञ् चॉल्लन् कण्णिलनायिन् नॅडुञ्चॅल्वम् नीटिन्रि आंके कॅडुम् ।। ५७-६।।

परुषवचनशालिनो नरस्य स्फुटकरुणार्द्रतया विहीनदृष्टेः ।
अवधिरहितमप्यहो धनं तत् सपदि लयं बत यास्यतीति विद्धि ।।

परुष वचन वाले निर्दय नर की असीम संपत्ति भी बढ़े बिना शीघ्र ही मिट जाएगी ।

कटु वाक्कूकल चॉल्लुन्न कारुण्यरहितन्नॅयुम् ।

अविरिल्लात्त सम्पत्तु निलनिल्क्कातुटन् कॅटुम् ।।

Even the vast wealth of the man rough and rigid in speech, lacking in looks of amiability, will no longer increase but perish immediately.

56. ऑरुत्ताररुम् पण्पिनार्कण्णुम् कण्णोटिप्पॉरुत्ताररुम् पण्पे तलै ।। ५८-९।।

स्वस्मै द्रुह्यन्ति ये तान् उदितकरुणया वीक्ष्य दृष्ट्या समस्तम्
दोषम्मृष्यन् प्रकृत्यास्मितमधुरमुखः कीर्तितोऽसौ महात्मा ।।

अपने प्रति सदैव द्रोहबुद्धि रखने वालों को दयादृष्टि से देखकर उनके दोषों को क्षमा करके भूल जाना समस्त सदगुणों से परम उत्कृष्ट माना जाता हैं ।

द्रोहिप्पोरॅयुमत्यन्तकारुण्यक्कुलुर्कण्कलाल् ।

उयिञ्ञोट्टुन्नवन् नेटुम्माहात्म्यं निस्तुलं दृढम् ।।

The magnanimity of being invariably benign even to those who habitually offend us, is the highest of all virtues.

57. वॅल्लत्तनैय मलर्नीट्टम् मान्ततंम् उल्लत्तनैयतु उयर्वु ॥६०-५॥

निम्नता समनुपाततोंबुनो दीर्घता ननु मृणालके मता ।
उन्नतिश्च मनुजस्य सम्मिता चेतसो विपुलताप्रमाणतः ॥

मृणाल की लम्बाई पानी की गहराई के अनुपात में होती है; मानव की ऊँचाई भी उसके हृदय की विशालता के अनुरूप ही हो सकती है ।

वॅल्लत्तिन्रॅ प्रमाणम्पोल् नीलङ् काण्मितु पूक्कलिल् ।
उल्लम्पोल् मात्रमे काण्मतुल्लू मर्त्यंक्कुयर्च्चयुम् ॥

The lotus stalk can extend in proportion to the depth of water; the height to which a man can rise is also proportionate to the range of his he art.

58. कुटि मटिन्तु कुररम्पॅरुकुम् मटि मटिन्तु माण्ड उअरिरलवक्कु ॥६१-४॥

वंशाधःपतनं ततो द्रूततरं दोषाभिवृद्धि पराम्
आलस्येन युतो नरो वितनुते श्रेयःश्रमैरुज्झितः ॥

अपने श्रेय हेतु परिश्रम न करके सदा आलस्य में पड़ा हुआ आदमी अपने दोषों की वृद्धि एवं वंश के पतन को ही सम्मुख पाएगा ।

कुटिल् कॅट्टू पॅरुङ्कुररम् कूटिक्कूटि वलन्निटुम् ।
मटियेरि श्रमोत्साहं वॅटयु मर्त्यनॅन्नुमे ॥

If a man sunk in the slough of lethargy, ceases to strive after perfection, he will soon find his flaws flourishing and his domestic happiness declining.

59. पॉरियिन्मै याक्कु पयियन्रु अरिवरिन्तु आल्विनैयिन्मै पयि ।। ६२-८।।

ज्ञेयं साधु परिज्ञाय पौरुषं न करोति यः ।
श्रेयसे, स हि धिक्कार्यो हृतभाग्यो न गर्हितः ।।

हृतभाग्य होने से कोई निन्दा का पात्र नहीं बनता; अवश्य ज्ञातव्य विषयों का ज्ञान उपलब्ध करके जो आत्मश्रेय के पथ पर आगे नहीं बढ़ता वही धिक्कार्य है ।

अरियेण्टतरिन्जेररम् आराग्त काट्टिटात्तवन् ।

अतिनिन्द्यन् विचारिच्चाल् हृतभाग्यनगर्हितन् ।।

No man is looked down upon is fortune is unfavourable to him; it is ignominious indeed if a man does not endeavour to do his utmost after le arning what should be learnt.

60. अररेमॅन्रु अल्लपॅटुपवो पॅररेमॅन्रु ओम्पुतल् तेररातवर् ।। ६३-६ ।।

प्राप्तं प्राप्तमिति प्रकृष्ट विभवे येषां न हर्षो महान् ।
नष्ट नष्टमिति स्वनिर्धनतया किं सन्ति ते व्याकुलाः ।

"मैंने सब कुछ पाया ! हाँ सब कुछ पाया" इस प्रकार जिसने पहले डींग नहीं मारा हो वह कभी दुःख से इस प्रकार आक्रन्दन नहीं करेगा—"हाय रे सत्यानाश हो गया ! सब कुछ बिगड़ गया ।"

नेटि जान् नेटि आनॅन्नुल्लत्यानन्द मॅयात्तवर् ।

तुलञ्ञाल्लो तुलञ्ञाल्लो कष्टमॅन्नल्ललान्निटा ।।

Those who never boasted before—"Ha, see ! I have this, I have this !" will never cry in distress, "Lost, every thing is lost !"

61. पयुत्तॅण्णु मन्तिरियिन् पक्कत्तुल् तॅव्वोर् ऍयुपतु कोटियुरुम् ॥ ६४-६ ॥

कोटि सप्ततिसंख्याकममित्रमबलमन्तिके ।
मन्त्रिणो द्रुह्यतो राज्ञे न स्मृतं बलवत्तरम् ॥

सत्तर करोड़ शत्रुओं की समीपस्थित पक्तिबद्ध सेना भी द्रोहबुद्धिवाले मन्त्री से कम हानिकारक होगी ।

राजाविन् द्रोहमोक्कुन्न मन्त्रियॅ वकाट्टिलुम् बत ।
दुर्बलर् तन्नॅ शत्रुक्कल् कोटिसप्ततिसख्ययिल् ॥

Seventy crores of foes in array nearby are less injurious than a minister of evil intents.

62. केट्टार्पिणिक्कुम्त कैयवाय् क्केलारुम् वेट्प मॉयिवताम् शॉल् ॥ ६५-३ ॥

श्रोतॄनविकलश्रद्धान् इतरान् श्रवणोत्सुकान् ।
गुणपौष्कल्यतः कुर्यात् उक्तिः सः सूक्तिरुच्यते ॥

उक्ति तब सूक्ति बनती है जब श्रोतागण अवधानयुक्त रहें और दूसरे श्रवणोत्सुक बनें ।

केट्टवर् श्रद्ध पूण्टेरॅर लयिप्पान्; केट्टिटात्तवर् ।

वॅम्पुवान् तक्कतां वण्णं चॉल्वताम् नल्ल चॉल्लिह ॥

A speech is well delivered if it is so articulated as to charm the listeners and make the others thirst to hear.

63. पल शॉल्लस्कामुरुवर् मग्र माशरर शिल शॉल्लव् तेररातवर् ॥ ६५-६ ॥

वाचालत्वमभीप्सितं कटुतरं नूनं हि तैः सन्ततं ।
निर्दोषाणि वचांसि कानिचन ये वक्तुं न शक्ताः स्वयम् ॥

चन्द निर्दोष बचन कहने का जिनको अभ्यास न हो वे ही वाचाल बनने में इच्छुक रहते हैं ।

पलतुं चॉल्लुवान् वॅम्पुं नून नन्नॅच्चुरुक्कमाय् ।
दोषमिल्लात्त वाक्कॉट्टु चॉल्लुवान् कॅल्ॅयात्तव ॥

Only those who have not trained themselves to utter a few faultless words will desire verbosity.

64. ऍरॅरन्रु इरङ्कुव शॅय्यर्क शॅय्बानेल् मग्रन्न शॅय्यामै नन्रु ॥ ६६-५ ॥

पापमद्य किमिदं कृतं मयेत्यन्तरात्मनि विगर्हित स्वयम् ।
मा कुरुष्व यदि वा कृतं भवेत् सन्त्यजाचरणमीदृशं पुनः ॥

"कैसी गलती हो गई !" इस प्रकार बाद में व्यथित होने का कार्य मत करो ।

ऍन्ते तॅरिरतु ञान् चॅय्ततॅन्नु दुःखिच्चिटुं पटि ।
चॅय्यॉला चॅय्तु पोयॅन्नाल् पिन्नॅच्चॅय्याय्क नल्लताम् ॥

Commit no fault that should be regretted later, saying "Oh ! What a slip !": if it is already done, refrain from doing it again.

65. अयवकॉण्ट ऍल्लाम् अयप्पोम् इयप्पिनुम् पिर्पयक्कुम् नर्पालवै ।। ६६-९ ।।

परात्रुधारापतनात् समार्जित निजाश्रुधारा सहित प्रयास्यति ।
शतं क्षतीनाँ प्रथमं प्रयच्छदप्यवेहि सत्कर्म हि सत्फलप्रदम् ।।

पराए आँसू गिराते-गिराते लिए हुए सब कुछ अपने आंसू गिराते-गिराते खो जाओगे; आरम्भ में हानि उठाने पर भी सत्कार्यों के द्वारा ही सत्फल प्राप्त कर सकोगे ।

कर :: कैप्परुमॅल्लां कण्णीरॉट्टु कॅटुम् ।
पूर्वकष्टदसत्कर्मम् आॅट्टुविल् नन्म नल्किटुम् ।।

What is acquired through tears caused will siip off along with tears shed; though there may be an initial setback, good deeds will surely bring in rewards later.

66. उरुवु कण्डु ऍल्लामै वेण्डुम् उरुल् पॅरुन्तेक्कु अच्चाणि अन्नार् उटैत्तु ।। ६७-७।।

ह्रस्वाकारमभीक्ष्य कोऽपि सहसा गर्हेन्न कंचिन्नरम्
चक्रस्थ किमुपेक्षते लघुतरं कील गुणज्ञो रथी ।।

ह्रस्व आकार देखकर किसी की अवहेलना की नहीं जाय; संसार में ऐसे बहुतेरे हैं जो धुरे पर लगी कील जैसे है, बड़े-बड़े रथों के पहिए भी जिसके द्वारा गिरने से रोके जाते हैं ।

रूपं चॅरुतु कण्टिट्टु पुन्छिच्चीटरुतारॅयुम् ।
ऍन्नयो मन्निलुण्टल्लो तेरिलच्चाणियॉन्तवर् ।।

Smallness in size need not cause derision; the world requires even those who resemble the linch pin fixed at the end of the axle to keep in position the wheel of the big rolling chariot.

67. नट्टाक्कु नल्ल शॅयलिन् विरैन्तते ऑट्टारै ऒट्टिक्कॉलल् ॥ ६८-६ ॥

सत्कारापेक्षया वन्धुमित्रादीनाँ विशेषतः ।
नीतिविज्ञैस्त्वरा कार्या सन्धाने शत्रुभिः सह ॥

शत्रुओं के साथ सन्धि करना मित्रों का सत्कार करने से भी अत्यन्त आवश्यक है ।

सत्कारं मित्रवर्यक्कु चॅय्युन्नतिनु मुम्पिलाय् ।
एररं वशगराक्केणं शत्रुक्कलॅ नयत्तॉटॅ ॥

The exigence of coming to friendly terms with foes before entertraining one's own friends should be understood by tactful persons.

68. तॉक चॉल्लि तूवात नीक्कि नकच्चॉल्लि नन्रि पयप्पतां दूतु ॥ ६९-५ ॥

उक्त्वा सक्षेपतः कार्यं पारुष्यमपहाय च ।
प्रीणयन् नर्मभिः सर्वान् दूतः कल्याणकृत् भवेत् ॥

संक्षेप में कार्य बताकर, रूक्षता का त्याग करके नर्म वचनों से सबको हँसानेवाला दक्ष दूत कल्याणकारी बनता है ।

चुरुक्किच्चॉल्लि कार्यङ्ङल् पारुष्यं कैवॅटिञ्ञुटन् ।
रसिप्पिच्चारॅयुं नन्नाय् दूतन् नन्म वरुत्तणम् ॥

Setting forth the points succinctly, avoiding rudeness and eliciting the warmth of smile with pleasantries all round, a good messenger brings good results.

69. अकलातु अणुकातु तीक्कायवार्पोलक इकल्वेन्तच्चेर् न्तॉयुकुवार् ॥ ७०-१॥

दूर नापसरेत् न वातिनिकटं शैत्यार्दितोऽग्वेर्यथा
वाञ्छन् शाश्वतसाह्यमस्थिरमते राज्ञोऽपि मन्त्री तथा ॥

चंचल चित्त राजा का सन्तत साहचर्य चाहने वाले, सिगड़ी के साथ शैत्यपीड़ितों का सा आचरण करें; अत्यन्त समीप भी नहीं जायें, बहुत दूर भी नहीं रहें।

अकलातॅयदुक्कातॅ तीक्कायुन्नवर्पोलवे ।
स्थिरचित्ततयिल्लात्त नृपनोटाचरिक्कणम् ॥

Those who desire constant companionship with a capricious king should behave like those who warm themselves before fire by never going too near nor keeping far apart.

70. कुरिप्पिकुं रिप्पुणरावायिन् उरुप्पिनुल् एँन्न पयत्तवो कण् ॥ ७१-५ ॥

इङ्गितेन परकीयमिङ्गितं शक्नुयात् यदि न वेत्तुमंजसा ।
अंगकेषु किल मुख्यतां गतं लोचनद्वितयमप्रयोजनम् ॥

इशारों से इरादों को ताड़ नहीं सके तो अगों में प्रधानभूत आँखों से क्या लाभ हुआ ?

कुरिप्पिल् निग्नु कायंङ्ङल् कुरिप्पायुणराय्किलो ।
एॅन्तुबानॉरु मुख्यत्वं कण्णिन्नवयवङ्ङलिल्

If by gestures imports are not comprehended, of what avail are eyes amongst one's limbs ?

71 पुल्लवैयुल् पॉञ्चान्तु चॉल्लर्क नल्लवैयुल् नन्कु चॅलञ्चॉल्लुवार् ॥ ७२-६ ॥

अपण्डितानां विगुणे समाजे स्मृतेर्विलोपादपि न ब्रुवीरन् ।
असंशयं ये सुधियां सभायां स्फुटं हि भव्यं गदितुं समर्थाः ॥

पण्डितों के सत्समाज में भव्य भाषण देने की क्षमता रखनेवाले भूल से भी नीचों की जमात में कुछ भी नहीं बोलें ।

मऱन्नुं चॉल्लिटायकॉन्नुं मूढन्मारुटॆ गोष्ठियिल् ।
विद्वान्मारुटॆ मुम्पाकॆ अर्थवत्तायुरप्पवर् ॥

Those who are competent to address effectively an assembly of the learned should never stoop to speak anything even forgetfully in the assemblage of the mean.

72. अंगणत्तुल् उक्क अमिय्तरराल् तंगणत्तर् अल्लार्मुन् कोट्टि कॉलल् ।

अंगणे तदमृतेन सेचनं गोष्टिरात्मगणबाह्यगैः समम् ॥

अपने गण के बाह्य के लोगों के जलसे में भाग लेना बहुमूल्य अमृत आँगन में उड़ेलने जैसा मूर्खता का काम है ।

मुररत्तमृतमूररुन्न पन्तियामिल्ल संशयम् ।
कूट्टुविट्टन्यरोटॉत्तु सल्लापत्तिनु वॅम्पुकिल् ॥

Taking part in a gathering outside one's circle is as foolish as wasting nectar down the drain in the yard.

73 पकैयकत्तुच्चावार् ऍलियर् अरियर् अवैयकत्तु अञ्चातवर् ॥ ७३-३॥

अविचला बहुपण्डितमण्डिते ननु नरा विरला हि सभागृहे ।
अविरला विपदग्रहसम्मुखा मरणमारणमार्गचरा रणे ॥

लड़ाई के मैदान में जूझनेवाले बहुतेरे; परन्तु पण्डितमण्डित सभा में भाषण देने से नहीं डरनेवाले बहुत कम ।

भटन्मारॅन्त्रयो मन्निल् पटयिल् चावतिन्नुमे ।
सभयिल् दुर्लभं रण्टु निर्भयोक्तिकल् चॉल्लुवोर् ॥

Many there are ready to die in the battle field but few indeed are they who never dread to address an assembly of the learned.

74. वालॉटॅन् वन्कण्णरल्लार्क्कु ; नूलॉटॅन् नुण्णवै अञ्चुपवर्क्कु ॥ ७३-६ ॥

खड्गेन किं तस्य रणेऽस्ति भीरोः
ग्रन्थेन किं सन्त्रसतः सभायाम् ॥

हाथ में तलवार लेकर वह क्या करेगा जिसकी वीरों की सी तीक्ष्णदृष्टि नहीं हो ? हाथ में ग्रन्थ पकड़कर वह क्या करेगा जो विद्वानों की सभा में प्रवेश करने से भी डरे ?

वालु कॉण्टॅन्तु चॅय्तीटु वीर्यमिल्लात्त कोयकल् ।
ग्रन्थ कॉण्टॅन्तु साधिक्कु सभाकम्पिकल् विद्विकल् ॥

What can the coward bereft of the keen vision of the valorous achieve with a sword ? Of what avail is a book of knowledge vast, to those who dread to tread the precincts of the council of the learned ?

75. पल्कुयुवुम् पाय पॅय्युम् उट्पकैयुम् वेन्तलैक्कुम् कॉल् कुरुम्पुम् इल्लतु नाट्ु ॥ ७४-५॥

बाहुल्यमुपजापानांम् अन्त: क्षोभश्च नाशकृत् ।
नृपद्विट् घातकाश्चैव श्रेष्ठे देशे सुदुर्लभा: ॥

वही श्रेष्ठ देश होता है जिसमें अन्तर्दलीय स्पर्धा, जनता का विद्रोह और शासनद्रोही हत्यारे डाकुओं का बोलबाला नहीं हो ।

पल कुट्टङ्ङल्, पायाक्कु उल्क्षोभम्, राजवैरिकल् ।
घातकर् मुरुमिक्कूट्टर् नाट्ु नन्नॅड्ःकिलिल्ल वान् ॥

That is a flourishing realm which is free from party-factionalism, internal uprisings and murderous bands of dacoits inimical to the ruler.

76. अरन् ईनुम् इन्पमुम् ईनूम् तिरनरिन्तु तीतिन्रि वन्त पॉरुल् ॥७६-४॥

धर्मप्रदं कामदमात्मसात्कृतं वित्तं सुविज्ञैर्दुराचारवर्जितम् ॥

विवेकपूर्ण परिश्रम से दुराचार का वर्जन करके कमाया धन अवश्य ही धर्मवर्धक एव कामप्रद बनता है ।

धर्ममेकुम् श्रियं नल्कुम् आत्मसात्कृतमां धनम् ।
उपायम् नोक्कियाराञ्ञु तिन्म कूटातॅ नेट्ुकिल् ॥

Both virtue and bliss will be yielded by wealth acquired by discerning pursuits avoiding malpractices.

77. सेंबूक पॉरुलै क्वेंरुनर च्चेंरुक्करुक्कुम् एँ: कतनिकूंरियतु इल् ।। ७६-६।।

विक्तं सन्ततमुद्यमेन चिनुयात् यस्मात्प्रतिद्वन्द्विनाम्
गर्वं छेत्तुमतोधुना शिततरं तीक्ष्णायसं नापरम् ।

खूब डटकर धन कमाओ; शत्रुओं के दर्प को तितर-बितर करने के लिए इससे तीक्ष्ण-तर फौलाद कोई नहीं मिलेगा ।

पराञ्चेवर्कं रिपुक्कल्वकुल्लहङ्कारममत्तुंवान् ।
अतिलुं मूर्च्चयेरीटुमुरुक्किकल्वॉन्नुमेंङ्ङुमे ।।

Produce wealth in plenty; to hack off the impudence of your enemies there can be no sharper steel.

78. मर मानं माण्डवयिच्चॅलवु तेररम् एँन नान्के एमम् पटैक्कु ।। ७७-६ ।।

शौर्यं, सत्पथचारिता प्रतिपदं, मानस्तथा स्वात्मगो
विश्वासश्च महान्; चतुष्टयमिदं क्षेमाय सैन्यस्य वै ।।

शौर्य, मान, सत्पथानुवर्तन एवं आत्मविश्वास ये चारों सैन्यक्षेम के लिए आवश्यक हैं ।

शौर्यं सत्पथचारित्वं मानं विश्वास मॅन्निव ।
सैन्य क्षेमत्तिनी नालुं एँन्नुं आवश्यमाणु तान् ।।

Valour, Honour. Treading the path of the best tradition and self-confidence, these four sustain the army.

79. कान मुयलॅय्त अम्पिनिल् यानै पिय्त्त वेल् एग्तल् इनितु ॥ ७८-२॥

कानने शशतनुप्रभेदिनो मार्गणादपि च तुष्टिदम्मतम् ।
कुञ्जराच्च्युतमभीरुणेरितं शूलमाहवकुतूहलेन यत् ॥

शिकार करते खरगोश को तीर से मार गिराने की अपेक्षा लड़ाई के मैदान में हाथी पर भाला फेंकना अधिक उत्साहवर्धक है, चाहे चूक भी जाय ।

नायाट्टिल् मुयलम्पॅय्तु कॉन्नीटुन्नतिल् नल्लताम् ।
पटयिल् कुञ्जरत्तिन्मेल् पियय्क्कु वेलु वीशुकिल् ॥

Hurling a trident that misses an elephant in the battlefield is more heartening than hitting down a rabbit in the forest while ahunting.

80 निरै नीर नीरवर्केण्मै, पिरैमतिप्पिन्नीर पेतैयार् नट्पु ॥ ७९-२ ॥

सौहार्दं विदुषां क्रमोपचयवत् ज्योत्स्नेव पक्षे सिते
मूर्खाणामिह बन्धुता दिनमनु क्षीणेव चान्द्री कला ॥

सज्जनों का सौहार्द शुक्लपक्ष के चन्द्रमा की तरह दिन व दिन बढ़ता है; मूर्खों की मैत्री कृष्णपक्ष के चन्द्रमा की तरह दिन व दिन घटता है ।

शुक्लपक्षनिलावॉक्कुम् विद्वान्मारुटॅ सौहृदम् ।
मूढन्मारुटॅ बन्धुत्वम् कृष्णपक्षनिलावु पोल् ॥

Friendship of the wise increases day by day like the moon in the bright half of the lunar month; that of fools decreases as days pass, like the moon in the dark half.

81. नकुतपॅल्हुन्ह नट्टल् मिकुत्तिक्कण् मेट् शॅन्ह इटित्त् पॉरुट्ट् ॥ ७६-४ ॥

संलापाय न नर्मणेऽपि न बुधैः प्रार्थ्येत मैत्री पुनः
पूर्वं भर्त्सयितुं व्यतिक्रमविधौ नीतेः पथः कर्हिचित् ॥

हँसी-ठट्ठा करने के लिए मैत्री की नहीं जाती है; परन्तु नीतिमार्ग से व्यतिचलित होने पर सर्वप्रथम भर्त्सना करने हेतु।

चिरिक्कानुं कलिक्कानुं अल्ल सौहार्दबन्धनम् ।
माद्यं चॅल्कुड् भर्त्सिक्कान् नॅरिकेट्टुक्कल् चॅय्यवे ॥

It is not for exchanging plesantries that friendship with others should be sought after; it is to provide you with an opportunity for rebuking and being rebuked at the very outset when either of you strays from the path of virtue.

82. उरिन् नट्टु अरिन् ऑरूउ ऑप्पिलार्कॅण्मै पॅरिनुं इयप्पिनुं ऍन् ॥ ८२-२ ॥

संपत्तौ समुपैति दूरमपयात्यापत्तिकाले खलः ।
सौहार्देन च तादृशां वदत किं लब्धेन नष्टेन वा ॥

संपत्ति में सौहार्द का बहाना करके आपत्काल में साथ छोड़ने वाले बुरी नीयत के लोगों की दोस्ती के मिलने या छूट जाने से क्या बनता बिगड़ता है?

समृद्धियिलुट्टलॅत्तु दुःखात्तलकलुन्निते ।
ऍन्तुवान् खलसौहार्दं नाट्याकु नष्टिक्कलुम् ?

What purpose can be served by the gain or loss of friendship with such inconsistent fellows as become friends at the time of affluence and stay away when we are in difficulties ?

83. नाणामै नाटामै नारिन्मै यातॉन्रुम् पेणामै पेतै तॉयिल् ॥ ८४-३ ॥

कृत्यबोधविरहोऽस्तलज्जता निर्दयत्वमपि धर्मविच्युतिः ।
दृश्यते किल चतुष्टयम् त्विदं मूर्खपूरुषगतं निसर्गतः ॥

लज्जाहीनता, कर्तव्यबोध का अभाव, निर्दयता एवं अधार्मिक भावना—ये मूर्खों के नैसर्गिक गुण हैं ।

नाणिक्काय्क, श्रमिक्काय्क, निर्दयत्वमधर्मवुम् ।
मूढरिल् कण्टिट्टुन्नल्लो प्रकृत्या नालुमॅप्पॉयुम् ॥

No sense of shame. no pursuit of duty, no feeling of sympathy and no cherishing of virtue—these are congenital in a fool.

84. पॅरितिनितु पेतैयार् केण्मै पिरिविन् पीयै तरुवतॉन्रु इल् ॥ ८४-९ ॥

मधुरं मूर्खसौहार्दं वियोगे यन्न दुःखदम् ॥

मूर्खमैत्री अत्यन्त मधुर है क्योंकि वियोग के समय पीडाकर नहीं होती ।

मिकवुं मधुरं तन्ने मूढर् तङ्ङटॆ मित्रत ।
पीड नल्कुम्नतल्लल्लो पिरियुम्पॉयुतॉट्टुमे ॥

Sweet indeed is the friendship contracted by or with a fool—no sorrow is felt at the time of parting.

85. अञ्चुम् अरियान् अमैविलन् ईकलान् तञ्चम् एँलियन् पकैक्कु ।। ८७-३ ।।

अदाता प्रियताशून्यः कातरो ज्ञानवर्जितः ।
रिपोरामिषतां याति विनैव हि परिश्रमम् ।।

स्वभावतः कायर, ज्ञानशून्य, सौजन्यरहित तथा अनुदार ऐसे लोग शीघ्र ही शत्रुओं के शिकार बन जाते हैं ।

अरिविल्लात्तवन् भीरु, बन्धुसौहृदमररवन् ।
अदानियुमॅल्प्पत्तिल् रिपुविन्निरयाँ दृढम् ।।

If one is naturally timid, lacking in knowledge, not amiable in society or liberal in giving gifts, one is marked as an easy target of attack.

86. पकै नट्पाक्कॉण्टॉयुकुम् पण्पुटैयालन् तकैमैक्कण् तङ्किररु उलकु ।। ८८-४ ।।

शत्रुतां निपुणताविशेषतः सौहृदेन परिवर्तयिष्यतः ।
श्लिष्टशासनविधेयतां धरा वीतसंशयमुपैति सन्ततम् ।।

शत्रुता को सौहार्द में परिवर्तित करने की स्वाभाविक क्षमता जिनमें हो, सारा संसार उन योग्य पुरुषों का लोहा मानता है ।

नैपुण्यं कॉण्टु शत्रुत्वं मैत्रियाय् मारिरटु नरन् ।
लोक मासकलम् क्षिप्रं कोयप्पॅटुत्तान् समर्थनाम् ।।

Naturally skilful in changing animosity into intimacy by an adaptable behaviour, the worthy will see the world clinging to them.

87. ऑन्रामै ऑन्रियार् कट् पटिन् एॅन्आग्रुम् पॉन्रामै ऑन्रल् अरितु ॥ ८९-६ ॥

मिथः संश्लिष्टसंघाते विच्छेदेन पदे कृते ।
अत्ययो दुर्निवारः स्यात् अचिरात् अपि वेधसा ॥

एकीकृत संघ में फूट पैदा हो तो नाश को रोकना असम्भव होगा ।

तङ्ङलिल् चेन्नु वाणोरिल् पिल्र्पेट्टु पोवुकिल् ।
अत्ययं दुर्निवारं तान् ऑट्टु तामसमॅन्निये ॥

If disunity creeps into a well-knit group, prevention of destruction is impossible for ever.

88. कॅटल् वेण्टिन् केलातु शॅय्क अटल् वेण्टिन् आररुपवर् कण् इयुक्कु ॥ ९०-३॥

अत्ययं कांक्षतां घाते समर्थान् धिक्कगेतु सः ।
प्राप्तुमिच्छन् स्वतो नाशं अश्टण्वन् नीतिडिण्डिमम् ॥

यदि स्वात्मविनाश की अभिलाषा हो तो नीतिशास्त्र की अनसुनी करके शत्रुसंहार समर्थ महान आत्माओं का धिक्कार किया जाय ।

नाशमिच्छिप्पतुण्टॅङ्किल् वकवॅक्कातॅयारॅयुम् ।
धिक्करिक्कू महान्मारॅ क्षति नल्कान् विदग्धरॅ ॥

If destruction is sought, let those who are powerful enough to crush seekers of ruin be slighted by not paying heed to injunctions of moral laws.

89. नट्टार् कुरै मुटियार् नन्रारराार् नन्नुवलाल् पॅट्टांकु ग्रॉयुकुपवर् ।। ९१-८ ।।

वैकल्यपूर्तिं सुहृदां न कुर्यात् सद्धर्मकार्याणि न चाददीत ।
भार्या जितस्तद्वशगश्च मर्त्यः सर्वत्र तत्प्रत्ययनेयबुद्धिः ।।

पत्नी के मोहजाल में फँसा हुआ, मित्रों की न्यूनता की पूर्ति कभी नहीं करेगा, धार्मिक कार्यों में भी रुचि नहीं लेगा।

बन्धुक्कलॅ सहायिक्का धर्मकार्यङ्ङल् चॅय्तिटा ।
भार्यतन् वशतिक्कुल्प्पॅट्टॅल्लां चॅय्युन्न पूरुषन् ।।

Those who are slaves to their shrewish wives will never replenish the deficiencies of their friends nor perform meritorious rites.

90. इरुमनप्पॅण्टिरुम् कल्लुम् कवरुम् तिरुनीक्कप्पट्टार् तॉटर्पु ।। ९२-१० ।।

धूर्ताङ्गनादेवनमद्यसक्ता दृक्पातबाह्या धनदेवतायाः ।।

दोहरे मन की दासियां, दारू और द्यूत इनके चंगुल में पड़े हुए लोग धन देवता के दृक्पात से बहिष्कृत होते हैं।

धूलिप्पॅण्णुङ्ङल् चारायं पकिटक्कलियु तथा ।
आश्रयिप्पवरॅन्नॅन्नुं लक्ष्मि कैविट्ट कूट्टराम् ।।

Two-some minded tarts, toddy and table of dice—those who are bewitched by these are forsaken by the Goddess of wealth.

91. मरुन्तॅन वेण्टावां याक्कैक्कु अरुन्तियतु अररतु पोरिर उणिन् ।। ९५-२ ॥

आत्मना प्रथमभुक्तवस्तुनो जीर्णतानुपदमेव केवलम् ।
पुष्कलं पुनरपि प्रमाणतः खादतः कथय किं किमौषधैः ॥

औषधि सेवन की कभी आवश्यकता नहीं पड़ेगी यदि पिछले भोजन के पूर्णतया जीर्ण होने पर फिर से खाया जाय ।

मरुन्नॅन्नतु वेण्टल्नो मुम्पिलुण्टतु वेण्ट पोल् ।
दहिच्चत्तिनु मेल् मात्रं रुचिच्चतु भुजिक्कुकिल् ॥

It is not necessary to take in any medicine if, one habitually takes food only after the due digestion and proper assimilation of the previous meal.

92 नलं वेण्टिन् नाणुटैमै वेण्टुम् कुलम् वेण्टिन् वेण्टुक यावर्क्कुम् पणिवु ॥ ९६-१०।

अकृत्ये धृतलज्जेन भाव्यं भावुकमिच्छता ।
नम्रेण चिररात्राय रक्षिता स्यात् कुलोन्नतिः ॥

अपना क्षेम-सौभाग्य चाहनेवाले अकृत्य में लज्जित हों । अपने वंश की स्थायी उन्नति की इच्छा रखनेवाले सदैव नम्र हों ।

नाणिक्केणमकृत्यत्तिल् नन्म यिच्छिप्पवन्सदा ।
नम्रनाकणमिच्छिक्कल् नित्यवुं स्वकुलोन्नति ॥

Do you desire all round welfare ? Do be ashamed to do undesirable things. Do you wish to maintain the nobility of your family ? Be humble and polite for ever.

93. पॅरुक्कत्तु वेण्टु पणितल् शिरिय शुरुक्कत्तु वेण्टुम् उयर्वु ।। ९७-३ ।।

संपत्प्रवृद्धौ तु भवेद्विनम्रो दैन्ये प्रवृद्धे सततोच्छिराश्च ।

संपत्समृद्धि के समय नम्र बनो; दीन-हीनता में धीरज धरो तथा सिर ऊँचा करो ।

अभिवृद्धि वरुम्बोरुम् नम्रनावुक मेल्क्कुमेल् ।
कष्टप्पाट्टुकल् वन्नॅङ्किल् उयत्तॅ तल मेल्क्कुमेल् ।।

In affluent circumstances be very humble and submissive; in times of privation cheer up your heart and lift your head aloft.

94. मेलिरुन्तुम् मेलल्लार्मेलल्लर्; कीयिरुन्तुम् कीयल्लार् कीयल्लवर् ।। ९८-३ ।।

नैव तुंगपदारूढो महत् कर्म विना महान् ।
धराशाय्यपि नो नीचो नीचकृत्यपराङ्मुखः ।।

श्लाघनीय कार्य किये बिना, केवल ऊँचे पद पर आसीन होने से कोई भी महान् नहीं बनता; निम्नस्तर का नर भी नीच कृत्यों से मुँह मोड़ने वाला नीच समझा नहीं जाता ।

मेलिरुन्नु महानाका निन्द्यकर्मङ्ङल् चॅय्युकिल् ।
स्तुत्यकर्मङ्ङल् चॅय्तॅङ्किल् नीचनाविल्लधः स्थितन् ।।

Merely by occupying a high post the petty minded cannot be considered great; though of humble status the noble hearted cannot be called base.

95. अन्पु नाएा् ओप्पुरवु कण्णोट्टं वाय्मैयॉडु ऐन्तु शाल्पु ऊन्रिय तूण् ॥ ९९-३ ॥

प्रीतिस्त्रपा तथौचित्यं कारुण्यं सत्यनिष्ठता ।
उत्कर्षोत्तंभनस्तम्भान् पञ्च जानीहि पावनान् ॥

प्रेम, दुष्कर्मविषयक लज्जा, व्यवहारौचित्य, दयालुता तथा सत्यनिष्ठा ये पाँचों उत्कर्षरूपी मकान के खम्भे हैं ।

प्रेमं: नाणवुमौचित्य कारुण्यं सत्यनिष्ठता ।
महत्वाभिधमां सौध ताङ्ङुवानञ्चु तूणुकल् ॥

Love, hesitation for undesirable activities, propriety of behaviour, sympathy and truthfulness, these are the five pillars supporting the rest house of perfection.

96. पण्पुटैयार्प्पट्टुण्टु उलकम्; अतु इन्रेल् मण्पुक्कु माय्वतु मन् ॥ १००-६ ॥

जगदेतदवेहि रक्षितं ध्रियते सज्जनहस्तसात्कृतम् ।
अथ चेदिह तद्विनाकृतं विलयं यास्यति वीतसंशयम् ॥

सन्त महात्माओं के अवलम्ब से ही सारा संसार सुविधृत है; अन्यथा धूल-धूल होकर विनष्ट हो गया होता ।

लोक निल्पतु संस्कारसम्पन्नरुटॅ वायिनाल् ।
आधारमतुमिल्लॅन्नु वन्नाल् मण् पुक्कु माञ्ञिटुम ॥

Protected by the perfectly virtuous, the world stands supported; otherwise it would have been reduced to dust.

अथ कामखण्ड:

97. पिणैयेर् मट नोक्कुम् नाणुमुटैयाट्कु अणि एवनो एतिल तन्तु ॥ १०९-९ ॥

मृगीमुग्धचलापांगी मन्दाक्षमधुरस्मिता

निसर्गालंकृता सुभ्रू: कृतकै: किम् भूषणै: ॥

यह सुन्दरी हिरनी के जैसे चञ्चल नयनों एवं मन्दाक्षमधुर मुस्कानों से ही अलंकृता है; कृत्रिम आभूषण क्यों लादे जायें ?

मृगीमुग्धचलापांगि मन्दाक्षमधुरस्मित ।

निसर्गालंकृतयक्कॆन्तिन्नलङ्कारङ्ङल् मररव ॥

Gentle roving eyes like those of a fawn and bashfulness adorning her in nature's own way, why should artificiai jewels burden her ?

98. इरु नोक्कु इवलुणकण उल्लतु ओरुनोक्कु नोय्नोक्कॊन्रन्नोय् मरुन्तु ॥ ११०-१ ॥

वीक्षणद्वयमसौ कृशोदरी, यद्बिभर्ति शृणु तस्य नैपुणीम् ।

एकमद्य सरुजं करोति मां अन्यदेव किल तत्र भेषजम् ॥

इस सुन्दरी के नीले नेत्र में दो कटाक्ष हैं; एक तो मुझे रुग्ण कर रहा है जब दूसरा उसी का औषध बन जाता है ।

रण्टु नोक्किवल् तन् कण्णिल् अतिन् चातुरि केल्क्कणो ।

नोक्किकुन्नतिलॊन्निप्पोल् मररतामतिनौषधम् ॥

Two fold glances shoot from the deep blue eyes of this fair damsel, one of them strikes me sick and the other heals me soon.

99. नीङ्गिन् तॆरूउ कुरुकुङ्काल् तण्णॆन्नुं तीयाण्टुप्पॆररल् इवल् ॥ १११-४ ॥

स्पृष्ट: शीतो दहति नितरां यश्च दूरेऽपयातम्

लेभे तन्वी कथयत कुतश्चित्रभानुं विचित्रम् ॥

गाढ़ स्पर्श से तन मन ठण्डा कर दिया; अलग होने पर जला-झुलसा दिया; इस प्रकार की विचित्र अग्नि यह कहाँ से लायी ?

तॉट्टाल् नल्ल तणुप्पुण्टे पॉल्लिक्कु नीङ्ङ्ङ्यालुटन् ।
विचित्रतरमीयग्नि एङ्ङ्ङु तान्निवल् वेटियो ?

In close contact it calmiy cools the frame; on separation it gives a burning sensation; from where could she have secured this strange fire ?

100. पालॉडु तेन् कलन्तररे पणिमॉयि वालॅयिरूरिय नीर् ॥ ११३-१ ॥

दुग्धमिश्रमधुवत् पिकोक्तिका श्वेतदन्ततलनिर्गलद्द्रवः ।
जब कभी वह मञ्जुल वाणी मुझसे बातें करती है, मानों दूध और शहद मिलकर उसके शुभ्र दाँतों तले से रिसता है ।

इतु नोक्कुकॉलक्कुन्नू मृदुमञ्जुलवाणि तन् ।
शुभ्रमा मॅकिरिल् कूटि प्पालुं तेनुं कलर्न्न नीर् ।

Pure milk and sweet honey mixed in due proportion trickles down the sides of her white teeth as she coos in my presence.

101. कण्णुल्लिन् पोणार् इमैप्पिन् पुरुवरार् नुण्णियर् एँन् कातलवर् ॥११३-६ ॥

अनिमीलितचक्षुर्भ्यां नापसर्पन्ति कर्हिचित् ।
अव्यथः पक्ष्मसंकोचे सूक्ष्मांगो हि मम प्रियः ॥
मेरी आँखों से वे कभी ओझल नहीं होते; मेरे प्रेमी इतने सूक्ष्म रूप हैं कि मैं आँख मूँदूँ तो भी उनको दर्द नहीं होता ।

इरुकण्णकलिल् निन्नॅङ्ङुं पोकिल्लवरॉप्पिक्कलुम् ।
वेदनिक्कुल्लदच्चालुम् एँत्र सूक्ष्मं तॅन् प्रियन् ॥
From my eyes he never fades; even when I wink, he is not pained; so subtle and dainty is my lover.

102. इन्नातु इननिल् ऊर् वायूतल् अन्निनुं इन्नातु इनियार्प्पिरिवु ॥ ११६-८ ॥

पीडाकरो बन्धुविहीनदेशे वासस्ततोऽपि प्रियविप्रयोगः ॥

बन्धुहीन देश में रहना अत्यन्त पीडाकर होता है; प्रिय का वियोग उससे भी अधिक दुःखजनक होगा।

स्वन्तम् बन्धुक्कलिल्लात्त नाट्टिल् वाय्वतु दुःखदम् ।
अतिलु दुःखदं पार्त्ताल् प्रियर्नॅप्पिरियुन्नते ॥

Deplorable indeed is dwelling in a place devoid of dear kinsmen; still more cheerless is the separation from one's own sweet heart.

103. उल्लक्कलित्तलुं काण मकिय्तलुम् कल्लुक्किल् कामत्तिकुं उण्डु ॥ १२९-१ ॥

दर्शं दर्शं प्रमदभरता स्फीतचेतःप्रहृष्टिः
कामे दृष्टा प्रणयविशदे नैव मद्येऽतिरूक्षे ।

मनन करते-करते अत्यन्त मुदित होना तथा देखते-देखते उल्लसित होना कामना में है, शराब में नहीं ।

उल्लल् तिरलुमुत्साहं काणक्काणॅ मकिय्च्चियुम् ।
कल्लिन्निल्लतु पार्त्तीटिल् काण्मू कामत्तिल् मात्रमे ॥

Excess of pleasure in thinking about and cheering joy on seeing, are afforded by love and not by liquor.

104. अवर् नॅञ्चु अवर्क्कातल् कण्टुम एॅवन् नॅञ्चे नी एॅमक्कु आकाततु ॥१३०-१॥

चित्तं तस्य तदीयमेव न पुनर्मत्पार्श्वगं कर्हिचित्
दृष्ट्वैतत् किमु नो समग्रमधुना त्वं मामकीनं मनः ॥

उनका चित्त उन्हीं का है यह देखकर भी हाय रे मेरे मन ! तू मेरा ही क्यों नहीं ?

अवन् नॅञ्जवनिल् तङ्ङ इतुकण्टिट्टु मॅन्तुवान् ।
एॅन् नॅञ्चे । नी एॅनिक्किप्पोल् स्वन्तमाकात्ततॉट्टु मे ॥

Even after seeing that his heart is always his, alas my heart ! Why should you be not mine ?

105. പേരാ അമൈ മഞ്ചു് പേരിന് പിരിവു അഞ്ചുമ് അരാമ ഇടുമ്പൈത്തേന് നെഞ്ചു ॥१३०-५॥ (transliterated:) पॅरा अमै मञ्चु पॅरिन् पिरिवु अञ्चुम् अराम इदुम्पैत्तॅन् नॅञ्चु ॥१३०-५॥

अलब्धिभीरु प्रियविप्रयोगे प्रिये च लब्धेऽपि वियोगभीरु ।
समाहितं नैव कदापि चित्तं व्यथाकरं मे सततं मदीयम् ॥

वियोगकाल में प्रिय की पुन: प्राप्ति नहीं होने का भय; संगम के समय पुन: वियोग होने का भय; इस प्रकार मेरा मन अविरत दुःख से भरा हुआ है ।

किट्टाय्किलधिकं पेटि किट्टियाल् पिरिविल् भयम् ।
कष्टमॅन् नॅञ्जु भग्नाशं मृट्टातॅन्नुम् भयाकुलम् ॥

Afraid of no re-union at first and on being re-united afraid of immi-nent separation, my heart is tormented by incessant sorrow.

106. तञ्चम् तमरल्लर एतिलार तामुटैय नॅञ्चम् तमरल् वयि ॥ १३०-१० ॥

यदा न हृदयं स्वीयं स्ववशं नैव सुस्थितम् ।
तदा का वा भवेदाशा स्ववश्यत्वे परस्य च ॥

जब अपना चित्त भी अपने वश में नहीं रहता तब पराया अपने बश में रहेगा इसका क्या भरोसा ?

स्वन्तमां हृदयं पोलुं स्वन्तमल्लॅन्नु वायुक्कवे ।
स्वन्तमल्लन्यरॅन्नाटल् ऎन्तिनां पन्तिकेटतिल् ॥

Others can hardly be our own when our own heart is not our own.

107. उप्पमैन्तरराल् पुलवि अतु शिरितु मिक्करराल् नील विटल् ॥ १३१-२ ॥

व्यञ्जने लवणं तद्वत् प्रणया प्रेमगोपनम् ।
यथार्हमुपयुक्तं चेत् तृप्तिदं नान्यथा ध्रुवम् ॥

प्रेम के व्यवहारों में लज्जा एवं संकोच व्यंजनों में नमक जैसा है। उचित मात्रा में उपयुक्त होने पर स्वादुकारक, अधिक होने से सब बिगाड़ देनेवाला।

तन्वितन् प्रेमसंकोचं करिकल्कप्पुपोलॅयाम ।
वेण्ट पोलतु चेक्कॅणम्; कूरियाल् पन्नियल्न तान् ॥

Reserve in love affairs due to excessive bashfulness is like salt in dishes; upto a limit it adds to the taste, beyond that it is deplorable.

108. उणलिन् उण्टतु अरल् इनितु; कामं पुणर्तलिन् ऊटलिनितु ॥ १३२-६

भोजनादपि भुक्तस्य जरणं मधुरं स्मृतम् ।
व्याजकोपो नितंबिन्याः सङ्गमाद् हृदयङ्गमः ॥

भोजन की अपेक्षा भुक्त पदार्थ का जरण अधिक मधुर है; उसी प्रकार इस सुन्दरी के संगम से भी क्रोध का बहाना अधिक हृदयंगम है।

उण्णुन्नतिलुमुन्मेषं उलकॉटतु दहिप्पतिल् ।
तय्यल् तन् व्याजकोपत्तिल् पुणरुन्नतिलुं सुखम् ॥

Assimilation of food taken in, is far sweeter than consuming; so also than even a close embrace, the feigned anger of the beloved is more heartening.

॥ शुभं भूयात् ॥